(सरकारी गजट उत्तर प्रदेश भाग-4 में प्रकाशित)

*सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र०, प्रयागराज की विज्ञप्ति संख्या परिषद् – **9/989,** के सातत्य में शैक्षिक सत्र **2020-21** के लिए स्वीकृत नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित एकमात्र पाठ्य-पुस्तक*

हिन्दी

कक्षा-11

- गद्य
- कथा साहित्य
- काव्य
- संस्कृत दिग्दर्शिका

सम्पादकद्वय

डॉ० रमेश कुमार उपाध्याय
एम०ए० (हिन्दी, संस्कृत), पी-एच०डी०
भूतपूर्व साहित्य विभागाध्यक्ष,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज

डॉ०योगेन्द्र नारायण पाण्डेय
एम०ए० (हिन्दी, संस्कृत),
बी० एड०, पी-एच०डी०
स्नातकोत्तर (शिक्षा प्रशासन) वरिष्ठ प्रवक्ता
महगाँव इण्टर कॉलेज,
महगाँव, कौशाम्बी

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ० प्र०, प्रयागराज द्वारा
स्वीकृत पाठ्यक्रम पर आधारित

संस्करण 2020-21

प्राक्कथन

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ0प्र0, प्रयागराज द्वारा नवीनतम् पाठ्यक्रमानुसार हिन्दी विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र निर्धारित किया गया है। उत्तीर्णांक 33 अंक और समय 3 घण्टे है।

हिन्दी साहित्य में समय-समय पर युगानुरूप परिस्थितियाँ दिखायी देती हैं। बदलते समय को साहित्य ने दक्षतापूर्वक ग्रहण किया है और पाठकों के समक्ष प्रस्तुत भी किया है। साहित्य के विभिन्न रूपों में गद्य को सर्वथा गम्भीर माना गया है, क्योंकि इसमें बौद्धिकता के साथ व्यावहारिकता का आग्रह अधिक दिखायी देता है। पहले यह विधा काव्य के ही निकट समझी जाती थी, परन्तु आज उपन्यास, कहानी, निबन्ध आदि अनेक रूपों में इसने अपनी अलग क्षमता प्रदर्शित की है। इन सबको विस्तार से प्रस्तुत करना एक छोटी-सी पुस्तक के लिए सम्भव नहीं है। प्रस्तुत पाठ्य-पुस्तक **'गद्य'** के प्रस्तुतीकरण में ध्यान रखा गया है कि माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ0 प्र0 द्वारा निर्धारित **कक्षा-11** के पाठ्यक्रमानुसार यह विद्यार्थी और सुधी अध्यापकों के लिए बोधगम्य हो।

छायावाद के बाद का समय तो हिन्दी गद्य के लिए स्वर्णयुग कहा जा सकता है। यह ऐसा समय था जब देश ने पराधीनता की बेड़ियाँ तोड़कर स्वाधीनता के मुक्त वातावरण में साँस ली। स्वतन्त्रता के बाद के साहित्य में राष्ट्र के नवनिर्माण पर बल दिया गया। इस युग के निबन्ध समसामयिक जन-समस्याओं के भी दर्पण हैं। प्रस्तुत पुस्तक में साहित्य के बदलते स्वरूप के परिप्रेक्ष्य में इसका दर्शन होगा। ऐसा लगता है कि यह प्रक्रिया अभी भी प्रवहमान है। यह स्वाभाविक ही है कि साहित्य भविष्य में भी समाज का दर्पण बना रहे।

गद्य के अन्तर्गत सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम से सम्बन्धित नवीन जानकारी दी गयी है, तो **'काव्य'** के अन्तर्गत रचनाओं का संकलन करते समय कवियों के कालक्रम पर विशेष ध्यान दिया गया है। **'काव्य'** में कबीर, जायसी, सूर, तुलसीदास, केशवदास, बिहारी, भूषण, सेनापति, देव एवं घनानन्द की चर्चित रचनाओं का संकलन विद्यार्थियों की रुचि एवं स्तर के अनुकूल किया गया है ताकि विद्यार्थी पाठ्यवस्तु को सरलता से ग्रहण कर सकें। विद्यार्थियों की सुविधा हेतु प्रत्येक पाठ के प्रारम्भ में कवि-परिचय तत्पश्चात् काव्य-रचना और अन्त में प्रश्न-अभ्यास दिये गये हैं, जिससे विद्यार्थी परीक्षा के अनुरूप तैयारी कर सकें।

कथा साहित्य में जिन कहानियों का संकलन किया गया है, वे हिन्दी के आधुनिक काल की देन हैं। **'कथा साहित्य'** में पाँच चर्चित लेखकों की श्रेष्ठ कहानियों का संकलन किया गया है। विद्यार्थियों की सुविधा एवं उन्हें कहानी विधा का विधिवत ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से प्रस्तुत संकलन में भूमिका के अन्तर्गत हिन्दी कहानी का गद्य साहित्य में स्थान, कहानी की परिभाषा, कहानी के प्रकार, कहानी के प्रमुख तत्त्वों का विवेचन एवं कहानी के उद्भव एवं विकास का पूर्ण विवरण दिया गया है।

हिन्दी का पूर्ण ज्ञान कराने के उद्देश्य से संस्कृत के अन्तर्गत दस पाठों का समावेश किया गया है। व्याकरण की समुचित जानकारी के लिए हिन्दी एवं संस्कृत व्याकरण को भी इस पाठ्यपुस्तक में स्थान दिया गया है।

यद्यपि पुस्तक को उपयोगी बनाने का भरसक प्रयास किया गया है, तथापि लेखन में सम्भावनाएँ सर्वदा विद्यमान रहती हैं। भविष्य में यदि विद्वज्जनों की ओर से रचनात्मक सुझाव आये तो उनका स्वागत किया जायेगा। यदि उनके सुझावों से पुस्तक और समृद्ध हो, तो हम उनके आभारी होंगे।

–संपादक एवं प्रकाशक

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र०, प्रयागराज द्वारा 2021 की परीक्षा के लिए निर्धारित नवीन पाठ्यक्रम

हिन्दी

कक्षा-11

पूर्णांक : 100

☞ इस विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र तीन घण्टे का होगा। सम्पूर्ण प्रश्न-पत्र दो खण्डों में विभाजित है—

(क) गद्य, पद्य, खण्डकाव्य, नाटक और कहानी।

(ख) संस्कृत–गद्य, पद्य, निबन्ध, काव्य सौन्दर्य के तत्त्व, संस्कृत व्याकरण और अनुवाद।

खण्ड - 'क'

50 अंक

1. **हिन्दी गद्य का विकास** (गद्य की पाठ्य-पुस्तक में दिये गये पाठों पर आधारित विभिन्न कालों में गद्य की भाषा-संरचना, विधाओं में परिवर्तन, युग-प्रवर्तक लेखकों का योगदान एवं प्रमुख रचनाएँ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न। **1× 5 = 5 अंक**
2. **काव्य साहित्य का विकास** (विविध कालों की काव्य प्रवृत्तियाँ, उनमें परिवर्तन, प्रतिनिधि कवि एवं उनकी प्रमुख कृतियाँ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न। **1× 5 = 5 अंक**
3. पाठ्यक्रम में निर्धारित गद्यांशों पर आधारित पाँच प्रश्न। **2× 5 = 10 अंक**
4. पाठ्यक्रम में निर्धारित पद्यांशों पर आधारित पाँच प्रश्न। **2× 5 = 10 अंक**
5. (क) संकलित गद्य के पाठों के लेखकों का साहित्यिक परिचय, जीवनी, कृतियाँ तथा भाषा-शैली।
   (शब्द सीमा अधिकतम 80) **3 + 2 = 5 अंक**

   (ख) **काव्य-सौष्ठव**—कवि-परिचय, जीवनी, कृतियाँ, साहित्यिक विशेषताएँ।
   (शब्द सीमा अधिकतम 80) **3 + 2 = 5 अंक**
6. **कहानी**—चरित्र-चित्रण, कहानी के तत्त्व एवं तथ्यों पर आधारित लघु उत्तरीय प्रश्न।
   (शब्द सीमा अधिकतम 80) **5 × 1 = 5 अंक**
7. **नाटक**—निर्धारित नाटक की विशेषताएँ एवं पात्रों के चरित्र-चित्रण पर आधारित लघु उत्तरीय प्रश्न।
   (शब्द सीमा अधिकतम 80) **5 × 1 = 5 अंक**

खण्ड - 'ख' 50 अंक

8. (क) पठित पाठ्य-पुस्तक के निर्धारित पाठों के संस्कृत गद्य का संदर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद। **2 + 5 = 7 अंक**

   (ख) पठित पाठ्य-पुस्तक के निर्धारित पाठों के संस्कृत पद्य का संदर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद। **2 + 5 = 7 अंक**

9. पाठों पर आधारित अतिलघु उत्तरीय प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर (कोई दो प्रश्न करना है)। **2 + 2 = 4 अंक**

10. **काव्य-सौन्दर्य के तत्त्व**

   (क) सभी रस–(परिभाषा, उदाहरण एवं पहचान) **1 + 1 = 2 अंक**

   (ख) अलंकार–(1) शब्दालंकार–अनुप्रास, यमक, श्लेष (परिभाषा अथवा उदाहरण) **2 अंक**

   (2) अर्थालंकार–उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, सन्देह, भ्रान्तिमान, अनन्वय, प्रतीप, दृष्टान्त तथा अतिशयोक्ति (परिभाषा एवं उदाहरण)

   (ग) छन्द– (1) मात्रिक–चौपाई, दोहा, सोरठा, रोला, कुण्डलिया, हरिगीतिका, बरवै (लक्षण एवं उदाहरण) **1 + 1 = 2 अंक**

   (2) वर्णवृत्त–इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, सवैया, मत्तगयंद, सुमुखी, सुन्दरी, बसन्ततिलका (लक्षण एवं उदाहरण)

   (3) मुक्तक–मनहर (लक्षण एवं उदाहरण)

11. **निबन्ध**–हिन्दी में मौलिक अभिव्यक्ति। दिये हुए विषय पर निबन्ध, (जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा आदि की जानकारी हेतु इन विषयों पर भी निबन्ध पूछे जायेंगे)। **2 + 7 = 9 अंक**

   संस्कृत व्याकरण–(क्रम संख्या 13 एवं 14 से वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जायेंगे)

12. **(क) सन्धि**– (1) स्वर सन्धि–एचोऽयवायावः एङः पदान्तादति, एङिपररूपम् **1 × 3 = 3 अंक**

   (2) व्यंजन–स्तोः श्चुनाश्चुः, ष्टुनाष्टुः, झलांजशझशि, खरिच, मोऽनुस्वारः, तोर्लि, अनुस्वारस्ययि पर सवर्णः

   (3) विसर्ग–विसर्जनीयस्य सः, ससजुषोरुः, अतोरोरप्लुतादप्लुते, हशिच, रोरि

   (ख) समास–अव्ययीभाव, कर्मधारय, बहुव्रीहि। **1 + 1 = 2 अंक**

13. **(क) शब्दरूप**– (1) संज्ञा–आत्मन्, नामन्, राजन्, जगत्, सरित्। **1 + 1 = 2 अंक**

   (2) सर्वनाम–सर्व, इदम्, यद्।

   (ख) धातुरूप– लट्, लोट्, विधिलिङ्, लङ्, लृट् (परस्मैपदी) स्था, पा, नी, दा, कृ, चुर् **1 + 1 = 2 अंक**

   (ग) प्रत्यय– (1) कृत्–क्त, क्त्वा, तब्यत्, अनीयर् **1 + 1 = 2 अंक**

   (2) तद्धित–त्व, मतुप, वतुप

   (घ) विभक्ति परिचय– अभितः परितः, समयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि, येनाङ्गविकारः, सहयुक्तेऽप्रधाने, नमः स्वस्तिस्वाहा स्वधाऽलंवषड्योगाच्च, षष्ठीशेषे, यतश्चनिर्धारणम् **1 + 1 = 2 अंक**

14. हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद। **2 + 2 = 4 अंक**

➡ हिन्दी व्याकरण–

(क) शब्दों में सूक्ष्म अन्तर

(ख) अनेकार्थी शब्द

(ग) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (केवल दो शब्द)

(घ) वाक्यों में त्रुटिमार्जन (लिंग, वचन, कारक, काल एवं वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियाँ)

(ङ) लोकोक्ति एवं मुहावरे

निर्धारित पाठ्य वस्तु (माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा निर्धारित अंश) का अध्ययन करना होगा।

खण्ड - 'क'

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	पाठ का नाम
1	**2**	**3**
गद्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु	*1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?
	*2. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी	महाकवि माघ का प्रभात वर्णन
	3. श्यामसुन्दर दास	भारतीय साहित्य की विशेषताएँ
	*4. सरदार पूर्ण सिंह	आचरण की सभ्यता
	*5. डॉ. सम्पूर्णानन्द	शिक्षा का उद्देश्य
	6. रायकृष्ण दास	आनन्द की खोज, पागल पथिक
	*7. राहुल सांकृत्यायन	अथातो घुमक्कड़, जिज्ञासा
	*8. रामवृक्ष बेनीपुरी	गेहूँ बनाम गुलाब
	*9. सड़क सुरक्षा	
काव्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु	*1. कबीरदास	साखी, पदावली
	2. मलिक मुहम्मद जायसी	नागमती वियोग-वर्णन
	*3. सूरदास	विनय, वात्सल्य, भ्रमरगीत
	*4. गोस्वामी तुलसीदास	भरत-महिमा, कवितावली, गीतावली, दोहावली, विनय पत्रिका
	5. केशवदास	स्वयंवर-कथा, विश्वामित्र और जनक की भेंट
	*6. कविवर बिहारी	भक्ति एवं श्रृंगार
	*7. महाकवि भूषण	शिवा-शौर्य, छत्रसाल प्रशस्ति
	8. विविधा	सेनापति, देव, घनानन्द
	*9. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	प्रेम माधुरी, यमुना छवि
	*10. जगन्नाथदास रत्नाकर	उद्धव प्रसंग, गंगावतरण
कथा साहित्य हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु	*1. प्रेमचन्द	बलिदान
	*2. जयशंकर 'प्रसाद'	आकाशदीप
	*3. भगवतीचरण वर्मा	प्रायश्चित
	*4. यशपाल	समय
	5. जैनेन्द्र कुमार	ध्रुव यात्रा

➡ नाटक (सहायक पुस्तक)

पुस्तक तथा लेखक	प्रकाशक	अनुदानित जिले
1. कुहासा और किरण लेखक–श्री विष्णु प्रभाकर	भारतीय साहित्य प्रकाशन, 204-ए वेस्ट एण्ड रोड, सदर, मेरठ।	मेरठ, आजमगढ़, मुरादाबाद, बलिया रायबरेली, झाँसी, सुल्तानपुर, लखीमपुर खीरी, बदायूँ, पीलीभीत।
2. आन की मान लेखक–श्री हरिकृष्ण प्रेमी	कौशाम्बी प्रकाशन, दारागंज प्रयागराज	वाराणसी, लखनऊ, इटावा, बरेली, फर्रूखाबाद, एटा, शाहजहाँपुर, उन्नाव, हमीरपुर।
3. गरूड़ ध्वज लेखक–लक्ष्मीनारायण मिश्र	साहित्य भवन, प्रा. लि., 93, के. पी. कक्कड़ रोड, प्रयागराज।	आगरा, गोरखपुर, जौनपुर, फैजाबाद बिजनौर, फतेहपुर, गोण्डा प्रतापगढ़, बहराइच, ललितपुर।
4. सूत पुत्र लेखक–डॉ. गंगासहाय 'प्रेमी'	रामप्रसाद एण्ड सन्स, अस्पताल रोड, आगरा।	प्रयागराज, सहारनपुर, अलीगढ़, मुजफ्फर-नगर, गाजीपुर, मेनपुरी, जालौन, हरदोई, बाराबंकी।
5. राजमुकुट लेखक–श्री व्यथित 'हृदय'	सिम्बुल लैंग्वेज कारपोरेशन अस्पताल रोड, आगरा	कानपुर, बुलन्दशहर, मथुरा, बस्ती, मिर्जापुर, देवरिया, बांदा, रामपुर।

खण्ड - 'ख'

संस्कृत दिग्दर्शिका

● पाठ्य वस्तु

*1. वन्दना
*2. प्रयागः
*3. सदाचारोपदेशः
*4. हिमालयः
*5. गीतामृतम्
6. चरैवेति-चरैवेति
*7. लोभः पापस्य कारणम्।
8. विश्वबन्द्याः कवयः
9. चतुरश्चौरः
10. सुभाषचन्द्रः
परिशिष्ट, व्याकरण, शब्दरूप, धातुरूप।

नोटः सामान्य हिन्दी के छात्रों को '*' वाले पाठों का अध्ययन करना है।

●●

विषय-सूची

खण्ड - 'क'

गद्य

- यह संकलन 11
- भूमिका 13
- हिन्दी गद्य के विकास पर आधारित प्रश्न 25
- अध्ययन-अध्यापन 33

1. * **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** 35
भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?
2. * **आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी** 42
महाकवि माघ का प्रभात-वर्णन
3. **श्यामसुन्दरदास** 49
भारतीय साहित्य की विशेषताएँ
4. * **सरदार पूर्णसिंह** 57
आचरण की सभ्यता
5. * **डॉ० सम्पूर्णानन्द** 66
शिक्षा का उद्देश्य
6. **राय कृष्णदास** 74
आनन्द की खोज, पागल पथिक
7. * **राहुल सांकृत्यायन** 79
अथातो घुमक्कड़-जिज्ञासा
8. * **रामवृक्ष बेनीपुरी** 87
गेहूँ बनाम गुलाब
9. * **सड़क सुरक्षा** 94

- परिशिष्ट (टिप्पणियाँ) 96

काव्य

- यह संकलन 99
- भूमिका 100
- काव्य साहित्य के विकास पर आधारित प्रश्न 116
- अध्ययन-अध्यापन 129

1. * **कबीर दास** 131
साखी, पदावली
2. **मलिक मुहम्मद जायसी** 141
नागमती-वियोग-वर्णन

3. * **सूरदास** 152
विनय, वात्सल्य, भ्रमर-गीत
4. * **गोस्वामी तुलसीदास** 162
भरत-महिमा, कवितावली, गीतावली, दोहावली, विनयपत्रिका
5. **केशवदास** 177
स्वयंवर-कथा, विश्वामित्र और जनक की भेंट
6. * **कविवर बिहारी** 187
भक्ति एवं श्रृंगार
7. * **महाकवि भूषण** 194
शिवा-शौर्य, छत्रसाल-प्रशस्ति
8. **विविधा** 202
सेनापति, देव, घनानन्द
● **परिशिष्ट (टिप्पणियाँ)** 211

कथा साहित्य

● यह संकलन 218
● भूमिका 219
● संकलित कहानियों का सारांश 227
1. * **प्रेमचन्द** 230
बलिदान
2. * **जयशंकर प्रसाद** 236
आकाशदीप
3. * **भगवतीचरण वर्मा** 243
प्रायश्चित
4. * **यशपाल** 248
समय
5. **जैनेन्द्र कुमार** 253
ध्रुव-यात्रा

नाटक

● **निर्धारित नाटकों का आलोचनात्मक अध्ययन** 264
1. **कुहासा और किरण** 266
विष्णु प्रभाकर
2. **आन का मान** 268
हरिकृष्ण 'प्रेमी'
3. **गरुड़ध्वज** 270
पं. लक्ष्मीनारायण मिश्र
4. **सूतपुत्र** 272
डॉ. गंगासहाय 'प्रेमी'
5. **राजमुकुट** 274
व्यथित हृदय

खण्ड - 'ख'

संस्कृत दिग्दर्शिका

प्रथमः पाठः	*वन्दना	276
द्वितीयः पाठः	*प्रयागः	278
तृतीयः पाठः	*सदाचारोपदेशः	281
चतुर्थः पाठः	*हिमालयः	284
पञ्चमः पाठः	*गीतामृतम्	286
षष्ठः पाठः	चरैवेति-चरैवेति	289
सप्तमः पाठः	*लोभः पापस्य कारणम्	291
अष्टमः पाठः	विश्ववन्द्याः कवयः	293
नवमः पाठः	चतुरश्चौरः	295
दशमः पाठः	सुभाषचन्द्रः	298

काव्य-सौन्दर्य के तत्त्व 301
- रस 301
- छन्द 306
- अलंकार 311
- पत्र-लेखन 318
- निबन्ध लेखन 321

1. संस्कृत व्याकरण 335
- (क) सन्धि 335
- (ख) शब्द-रूप 340
- (ग) धातु-रूप 344
- (घ) प्रत्यय 347
- (ङ) विभक्ति-परिचय 349
- (च) समास 351

2. हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद 353

3. हिन्दी व्याकरण 367
- (क) शब्दों में सूक्ष्म अन्तर 367
- (ख) अनेकार्थी शब्द 370
- (ग) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (केवल दो शब्द) 373
- (घ) वाक्यों में त्रुटिमार्जन (लिंग, वचन, कारक, काल एवं वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियाँ) 378
- (ङ) लोकोक्ति एवं मुहावरे 383

सामान्य हिन्दी के छात्रों के लिए

सामान्य हिन्दी के छात्रों को '*' वाले पाठों का अध्ययन करना है।

पुस्तक का नाम	
गद्य–	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी, सरदार पूर्णसिंह, डॉ० सम्पूर्णानन्द, राहुल सांकृत्यायन, रामवृक्ष बेनीपुरी, सड़क सुरक्षा।
पद्य–	संत कबीरदास, सूरदास, गोस्वामी तुलसीदास, कविवर बिहारी, महाकवि भूषण।
कथा साहित्य–	प्रेमचन्द, जयशंकर 'प्रसाद', भगवतीचरण वर्मा, यशपाल।
नाटक–	कुहासा और किरण, आन का मान, गरुड़ध्वज, सूतपुत्र, राजमुकुट।
संस्कृत दिग्दर्शिका–	वन्दना, प्रयागः, सदाचारोपदेशः, हिमालयः, गीतामृतम्, लोभः पापस्य कारणम्।

खण्ड–'क'

गद्य

यह संकलन

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश द्वारा निर्धारित नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार कक्षा-11 के छात्र-छात्राओं के लिए हिन्दी विषय की अनिवार्य पाठ्य-पुस्तक के रूप में गद्य गरिमा का प्रणयन किया गया है। इस पुस्तक का प्रणयन करते समय सभी उद्देश्यों का पूरा ध्यान रखा गया है। इसका **पहला उद्देश्य** यह रहा है कि छात्र-छात्राएँ हिन्दी गद्य के विगत सौ-डेढ़ सौ वर्षों के विकास से पूर्णरूपेण परिचित हो जायँ।

वस्तुतः हिन्दी गद्य से यहाँ तात्पर्य खड़ीबोली गद्य से है जिसका साहित्य में अनवरत् प्रयोग भारतेन्दु से आरम्भ होता है। इसीलिए भारतेन्दु को आधुनिक युग का जनक कहा जाता है। उन्हें ही इस बात का श्रेय है कि वे हिन्दी साहित्य को मध्य युग से निकालकर आधुनिक युग में ले आये। भारतेन्दु-युग में हिन्दी गद्य का स्वरूप स्पष्ट और स्थिर होने लगा। द्विवेदी-युग में वह व्याकरण के नियमों से अनुशासित हुआ। उसका परिष्कार और परिमार्जन हुआ। छायावाद-युग में वह अलंकृत हुआ। उसमें लाक्षणिकता का समावेश हुआ। उसकी अभिव्यंजना शक्ति बढ़ी और वह सूक्ष्म, कोमल भावनाओं तथा सुकुमार एवं रंगीन कल्पना चित्रों को व्यक्त करने में समर्थ हुआ। प्रगतिवादी-युग में ठोस सामाजिक यथार्थ को व्यक्त करने की प्रतिबद्धता के कारण उसमें कुछ परुषता और खरापन आया है और वह जीवन के बाह्य विस्तार को अभिव्यक्ति देने में समर्थ हुआ। इस युग की समाप्ति के साथ ही देश स्वतंत्र हुआ। हमारी आकांक्षाएँ बढ़ीं। हम देश-विदेश की साहित्यिक गतिविधियों से परिचित होने, आधुनिक जीवन के द्वंद्व, तनाव, संकुलता और बुद्धिवादिता को ग्रहण करने और जीवन की दौड़ में आगे बढ़ने के लिए व्यग्र हो उठे। इस पूरे परिवेश को अभिव्यक्ति देने के प्रयत्न में हिन्दी गद्य साहित्य में अनेक विधाओं का विकास हुआ। उसकी शब्द-सम्पदा में वृद्धि हुई। वह आधुनिक जीवन के बाह्य विस्तार को समेटने और आन्तरिक रहस्यों को व्यंजित करने में समर्थ हुआ। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के गद्य से आगे चलकर मोहन राकेश के गद्य तक की यात्रा के क्रम को छात्र-छात्राएँ भूमिका के अन्तर्गत विस्तार से पढ़ सकेंगे।

प्रस्तुत संकलन का **दूसरा उद्देश्य** कक्षा-11 के छात्रों को हिन्दी-गद्य की सभी प्रमुख विधाओं से परिचित कराना है। इसलिए इस संकलन में उन विधाओं को छोड़कर जिनका अध्ययन छात्रों को स्वतंत्र रूप से कराया जायेगा, शेष सभी को प्रतिनिधित्व दिया गया है। संस्मरण, शब्दचित्र, गद्यगीत, रिपोर्ताज, यात्रा-वृत्त आदि निबंधों की परम्परा में विकसित होनेवाली गद्य की अपेक्षाकृत

नयी विधाएँ हैं। प्रस्तुत संकलन में रामवृक्ष बेनीपुरी का **'गेहूँ बनाम गुलाब'** शब्दचित्र का, राय कृष्णदास का **'आनन्द की खोज, पागल पथिक'** गद्यगीत का प्रतिनिधित्व करनेवाली रचनाएँ समाविष्ट हैं।

इस संकलन का **तीसरा उद्‌देश्य** निबंधों के सभी प्रकार के रूपों और शैलियों से छात्रों को परिचित कराना है। इसलिए निबंधों का चयन करते समय उनके सभी रूपों को समाविष्ट करने की चेष्टा की गयी है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का **'भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है?'** निबंध विचारात्मक होने के साथ ही तत्कालीन सुधारवादी चेतना को व्यक्त करनेवाला है। द्विवेदी जी का **'महाकवि माघ का प्रभात-वर्णन'** वर्णनात्मक निबंध है। वह इस तथ्य का भी साक्षी है कि द्विवेदी-युगीन लेखक हिन्दी के अभावों को दूर करने के लिए संस्कृत से सामग्री लेने में संकोच नहीं करता था। अध्यापक पूर्णसिंह ने हिन्दी-गद्य को लाक्षणिक बनाकर उसे एक नया आयाम दिया था। उनका **'आचरण की सभ्यता'** निबंध भावावेगपूर्ण प्रवाहमयी शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन हमारे देश के सबसे बड़े घुमक्कड़ थे। **'अथातो घुमक्कड़-जिज्ञासा'** में घुमक्कड़ी के लिए आवश्यक प्रवृत्तियों और साधनों का उत्तम प्रतिपादन हुआ है।

डॉ0 सम्पूर्णानन्द देश के जाने-माने विद्वान् और शिक्षाविद् थे। उनका **'शिक्षा का उद्देश्य'** निबंध शिक्षा के व्यावहारिक एवं नैतिक दोनों प्रकार के उद्‌देश्यों पर प्रकाश डालनेवाला विचारात्मक शैली का श्रेष्ठ निबंध है। बाबू श्यामसुन्दर दास हिन्दी के प्रख्यात विद्वान् और अनन्य सेवक थे। उन्होंने साहित्य के सभी पक्षों पर सुगम एवं सुबोध शैली में विचार किया है। उनका **'भारतीय साहित्य की विशेषताएँ'** निबन्ध उनके व्यक्तित्व के अनुरूप है। इस प्रकार प्रस्तुत संग्रह में वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विचारात्मक, भावात्मक, आत्म-व्यंजक, व्यंग्यात्मक आदि सभी शैलियों का प्रतिनिधित्व करनेवाले निबंध संगृहीत हैं।

छात्रों का मानसिक संस्कार करना, उनके जीवन के प्रति रचनात्मक, स्वस्थ एवं व्यापक दृष्टिकोण विकसित करना, मानवीय भावनाओं एवं मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करना तथा राष्ट्र की एकता और अखण्डता की चेतना जागृत करना साहित्य-शिक्षा का लक्ष्य है। इस लक्ष्य की पूर्ति संकलन का **चौथा उद्‌देश्य** है। प्रस्तुत संकलन इस लक्ष्य की पूर्ति में पूर्णतः समर्थ है। निबंधों का चयन करते समय उनमें निहित मन्तव्यों एवं मूल्यों के प्रभाव और उपयोगिता पर भी विचार किया गया है। संकलन के सभी निबंध सुरुचिपूर्ण हैं। उनमें नैतिक एवं रचनात्मक दृष्टि को ही महत्त्व दिया गया है। वे देश की एकता के पोषक एवं व्यापक मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करनेवाले हैं।

जीवन के सभी उपादानों और तत्त्वों की भाँति भाषा एवं साहित्य भी गतिशील तत्त्व है। इनका स्वरूप समय एवं युग-प्रवृत्ति के परिवर्तन के साथ बदलता रहता है। इसलिए साहित्य के विद्यार्थी को संस्कारतः आग्रह-मुक्त होना चाहिए। न उसमें प्राचीन के प्रति मोह होना चाहिए और न नवीनता के प्रति आग्रह। प्रस्तुत संकलन में प्राचीन एवं नवीन के संतुलन पर भी ध्यान रखा गया है। हिन्दी भाषा और साहित्य का जो रूप आज है वह पहले नहीं था और आगे भी वह नहीं रहेगा, उसमें विकास और परिष्कार होता आया है और होता रहेगा। हर जीवित भाषा में यह विकास-प्रक्रिया चलती रहती है। इसलिए आज के मानदण्ड को आधार बनाकर भारतेन्दु-कालीन भाषा एवं वर्तनी को सुधारना या बदलना इतिहास के साथ अन्याय करना होगा। साथ ही भविष्य के लिए आज से ही कोई आग्रह बनाकर चलना भी अनुचित होगा।

विश्वास है कि छात्र-छात्राएँ इस पाठ्य-पुस्तक की सहायता से साहित्य और भाषा के प्रति संतुलित दृष्टि विकसित करने में समर्थ होंगे।

भूमिका

गद्य क्या है?–छन्द, ताल, लय एवं तुकबन्दी से मुक्त तथा विचारपूर्ण एवं वाक्यबद्ध रचना को 'गद्य' कहते हैं। गद्य शब्द 'गद्' धातु के साथ 'यत्' प्रत्यय जोड़ने से बनता है। 'गद्' का अर्थ होता है—बोलना, बतलाना या कहना। सामान्यतः दैनिक जीवन में प्रयुक्त होनेवाली बोलचाल की भाषा में गद्य का ही प्रयोग किया जाता है। गद्य का लक्ष्य विचारों या भावों को सहज, सरल एवं सामान्य भाषा में विशेष प्रयोजन सहित संप्रेषित करना है। ज्ञान-विज्ञान से लेकर कथा-साहित्य आदि की अभिव्यक्ति का माध्यम साधारण व्यवहार की भाषा गद्य ही है, जिसका प्रयोग सोचने, समझने, वर्णन, विवेचन आदि के लिए होता है। वक्ता जो कुछ सोचता है, उसे तत्काल अनायास गद्य के रूप में व्यक्त भी कर सकता है। ज्ञान-विज्ञान की समृद्धि के साथ ही गद्य की उपादेयता और महत्ता में वृद्धि होती जा रही है। किसी कवि या लेखक के हृदयगत भावों को समझने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है और गद्य ज्ञान-वृद्धि का एक सफल साधन है। इसीलिए इतिहास, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, धर्म, दर्शन आदि के क्षेत्र में ही नहीं, अपितु नाटक, कथा-साहित्य आदि में भी इसका एकच्छत्र प्रभाव स्थापित हो गया है। यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो आधुनिक हिन्दी-साहित्य की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना गद्य का आविष्कार ही है और गद्य का विकास होने पर ही हमारे साहित्य की बहुमुखी उन्नति भी सम्भव हो सकी है।

हिन्दी गद्य के सम्बन्ध में यह धारणा है कि मेरठ और दिल्ली के आस-पास बोली जानेवाली खड़ीबोली के साहित्यिक रूप को ही हिन्दी गद्य कहा जाता है। भाषा-विज्ञान की दृष्टि से ब्रजभाषा, खड़ीबोली, कन्नौजी, हरियाणवी, बुन्देलखण्डी, अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी इन आठ बोलियों को हिन्दी गद्य के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। हिन्दी गद्य के प्राचीनतम् प्रयोग हमें 'राजस्थानी' एवं 'ब्रजभाषा' में मिलते हैं।

गद्य और पद्य में अन्तर–हिन्दी साहित्य को दो भागों में बाँटा गया है—(1) गद्य साहित्य तथा (2) पद्य (काव्य) साहित्य। विषय की दृष्टि से गद्य और पद्य में यह अन्तर है कि गद्य के विषय विचार-प्रधान और पद्य के विषय भाव-प्रधान होते हैं। दूसरी भाषाओं के समान इस भाषा के साहित्य में भी पद्य का अवतरण गद्य के बहुत पहले हुआ है। पद्य में कार्य की अनुभूति, उक्ति-वैचित्र्य, सम्प्रेषणीयता और अलंकार की प्रवृत्ति देखी जाती है, जबकि गद्य में लेखक अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है। गद्य में तर्क, बुद्धि, विवेक, चिन्तन का अंकुश होता है तो पद्य में स्वतन्त्र कल्पना की उड़ान होती है। गद्य में शब्द, वाक्य, अर्थ आदि सभी प्रायः सामान्य होते हैं, जबकि पद्य में विशिष्ट। कविता शब्दों की नयी सृष्टि है, इसलिए इसका कोई भी शब्द कोशीय अर्थ से प्रतिबन्धित नहीं होता, जीवन की अनुभूतियों से उसका भावात्मक सम्बन्ध होता है, जबकि गद्य भावात्मक सन्दर्भों के स्थान पर वस्तुनिष्ठ प्रतीकात्मक अर्थ ग्रहण करता है। गद्य को 'निर्माणात्मक अभिव्यक्ति' कहा गया है अर्थात् ऐसी अभिव्यक्ति जिसमें निर्माता के चारों ओर प्रयोग के लिए तैयार शब्द रहते हैं। गद्य की भाषा काव्य की अपेक्षा अधिक स्पष्ट, व्याकरणसम्मत और व्यवस्थित होती है। उक्ति-वैचित्र्य और अलंकरण की प्रवृत्ति भी गद्य की अपेक्षा काव्य में अधिक होती है। गद्य में विस्तार अधिक होने के कारण किसी बात को खोलकर कहने की प्रवृत्ति रहती है, जबकि काव्य में किसी बात को संकेत रूप में ही कहने की प्रवृत्ति होती है। गद्य में यथार्थ, वस्तुपरक और तथ्यात्मक वर्णन पाया जाता है, जबकि काव्य में वर्णन सूक्ष्म, संकेतात्मक होता है। गद्य में विरला ही वाक्य अपूर्ण होता है, काव्य में विरला ही वाक्य पूर्ण होता है। इस प्रकार गद्य और पद्य विषय, भाषा, प्रस्तुति, शिल्प आदि की दृष्टि से अभिव्यक्ति के सर्वथा भिन्न दो रूप हैं और दोनों के दृष्टिकोण एवं प्रयोजन भी भिन्न होते हैं। गद्य में व्याकरण के नियमों की अवहेलना नहीं की जा सकती, जबकि पद्य में व्याकरण के नियमों पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। यद्यपि ऐसा नहीं है कि गद्य में भावपूर्ण चिन्तनशील मनःस्थितियों की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती और ऐसा भी नहीं है कि पद्य में विचारों की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती, किन्तु मुख्य रूप से गद्य एवं पद्य की प्रकृति उपर्युक्त प्रकार की ही होती है।

हिन्दी गद्य का स्वरूप और विकास

विषय और परिस्थिति के अनुरूप शब्दों का सही स्थान-निर्धारण तथा वाक्यों की उचित योजना ही उत्तम गद्य की कसौटी है। यद्यपि वर्तमान में प्रचलित हिन्दी भाषा खड़ीबोली का परिनिष्ठित एवं साहित्यिक रूप है, परन्तु खड़ीबोली स्वयं अपने आपमें कोई बोली नहीं है। इसका विकास कई क्षेत्रीय बोलियों के समन्वय के फलस्वरूप हुआ है। विद्वानों ने इसके प्राचीन रूप पर आधारित तत्त्वों की खोज करने के बाद यह माना है कि खड़ीबोली का विकास मुख्यतः ब्रजभाषा एवं राजस्थानी गद्य से हुआ है। कुछ विद्वान् इसको दक्खिनी एवं अवधी गद्य का सम्मिश्रित रूप भी मानते हैं। आज हिन्दी गद्य का जो साहित्यिक रूप है; उसमें कई क्षेत्रीय बोलियों का विकास दृष्टिगोचर होता है।

हिन्दी गद्य के आविर्भाव के सम्बन्ध में विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। कुछ दसवीं शताब्दी मानते हैं तो बहुतेरे तेरहवीं शताब्दी। 'राजस्थानी' एवं 'ब्रजभाषा' में हमें गद्य के प्राचीनतम् प्रयोग मिलते हैं। राजस्थानी गद्य की समय-सीमा ग्यारहवीं शताब्दी से चौदहवीं शताब्दी तथा ब्रजभाषा गद्य की समय-सीमा चौदहवीं शताब्दी से सोलहवीं शताब्दी तक मानना उचित प्रतीत होता है। अतः यह स्पष्ट है कि दसवीं-ग्यारहवीं से तेरहवीं शताब्दी के मध्य ही हिन्दी गद्य का आविर्भाव हुआ था। अध्ययन की दृष्टि से हिन्दी गद्य साहित्य के विकास को निम्नलिखित कालक्रमों में विभाजित किया जा सकता है—

1. पूर्व भारतेन्दु-युग अथवा प्राचीन युग — 13वीं शताब्दी से 1868 ई० तक
2. भारतेन्दु-युग — सन् 1868 ई० से 1900 ई० तक
3. द्विवेदी-युग — सन् 1900 ई० से 1922 ई० तक
4. शुक्ल-युग (छायावादी युग) — सन् 1922 ई० से 1938 ई० तक
5. शुक्लोत्तर युग (छायावादोत्तर युग) — सन् 1938 ई० से 1947 ई० तक
6. स्वातन्त्र्योत्तर युग — सन् 1947 ई० से अब तक।

➥ प्राचीन-युगीन गद्य

इस युग के अन्तर्गत हिन्दी गद्य के उद्भव से भारतेन्दु युग के पूर्व तक का समय लिया गया है। वस्तुतः हिन्दी गद्य-साहित्य के आदिकाल में हिन्दी गद्य के प्राचीन रूप ही यत्र-तत्र उपलब्ध होते हैं। राजस्थान व दक्षिण भारत में तो अवश्य हिन्दी गद्य के प्रारम्भिक रूप की झलक मिलती है। उत्तर भारत में ब्रजभाषा गद्य के ही उदाहरण अधिक मात्रा में प्राप्त होते हैं। प्राचीन युग में काव्य-रचना के साथ-साथ गद्य-रचना की दिशा में भी कुछ स्फुट प्रयास लक्षित होते हैं। 'राउलवेल' (चम्पू), 'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण' और 'वर्णरत्नाकर' इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। कुछ विद्वान 'राउलवेल' को ही राजस्थानी गद्य की प्राचीनतम रचना मानते हैं। 'राउलवेल' एक शिलांकित कृति है, जिसका पाठ मुम्बई के 'प्रिंस ऑफ वेल्स' संग्रहालय से उपलब्ध कर प्रकाशित कराया गया है। विद्वानों ने इसका रचनाकाल दसवीं शताब्दी माना है। इसकी रचना 'राउल' नायिका के नख-शिख वर्णन के प्रसंग में हुई है। आरम्भ में इस कृति के रचयिता 'रोडा' ने राउल के सौन्दर्य का वर्णन पद्य में किया है और फिर गद्य का प्रयोग किया गया है। दूसरी रचना 'उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण' है, जिसकी रचना महाराज गोविन्द चन्द्र के सभा-पण्डित दामोदर शर्मा ने बारहवीं शताब्दी में की थी। इस ग्रन्थ की भाषा का एक उदाहरण इस प्रकार है—"वेद पढ़ब, स्मृति अभ्यासिब, पुराण देखब, धर्म करब।" इससे गद्य और पद्य दोनों शैलियों की हिन्दी भाषा में तत्सम शब्दावली के प्रयोग की बढ़ती हुई प्रवृत्ति का पता चलता है। मैथिली के प्राप्त ग्रन्थों में ज्योतिरीश्वर का वर्णरत्नाकर ग्रन्थ ऐसी तीसरी रचना है। मैथिली हिन्दी में रचित गद्य की यह पुस्तक डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी और पण्डित बबुआ मिश्र के सम्पादन में बंगाल एशियाटिक सोसायटी से प्रकाशित हो चुकी है। डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी के मतानुसार इसकी रचना चौदहवीं शताब्दी में हुई होगी।

इसके उपरान्त तो राजस्थानी गद्य, ब्रजभाषा गद्य और खड़ीबोली का प्रारम्भिक गद्य-साहित्य आदि ही विचारणीय सामग्री है। हिन्दी-परिवार की भाषाओं में गद्य का उन्मेष सर्वप्रथम **राजस्थानी गद्य** में प्राप्त होता है। राजस्थानी में गद्य-परम्परा निश्चित रूप से ईसा की तेरहवीं शताब्दी से प्रारम्भ होती है। राजस्थानी गद्य के प्रारम्भिक विकास में जैन विद्वानों का विशेष योग रहा है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह ब्रजभाषा के गद्य-साहित्य की अपेक्षा अधिक प्राचीन व समृद्ध है। राजस्थानी गद्य दानपत्रों, पट्टे, परवानों,

सनदों, वार्त्ताओं और टीकाओं आदि के रूप में उपलब्ध होता है। उस पर संस्कृत अपभ्रंश की परम्परा का प्रभाव स्वाभाविक रूप से पड़ा है। राजस्थानी की प्रमुख गद्य रचनाएँ हैं—'आराधना', 'बालशिक्षा टीका', 'जगत् सुन्दरी प्रयोगमाला', 'अतिचार', 'नवकार', 'व्याख्यान टीका', 'सबतीर्थ नमस्कार स्तवन', 'तत्त्वविचार प्रकरण', 'पृथिवीचन्द्र चरित्र', 'धनपाल कथा', 'तपोगच्छ गुर्वावली', 'अंजनासुन्दरी कथा' आदि।

ब्रजभाषा गद्य का सूत्रपात संवत् 1400 वि0 के आस-पास माना जाता है। ब्रजभाषा गद्य का प्राचीनतम् रूप आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार सन् 1457 ई0 तक का ही उपलब्ध होता है और उन्होंने योगियों के धार्मिक उपदेशों में से कुछ उद्धृत कर उसे संवत् 1400 वि0 के आस-पास का ब्रजभाषा गद्य मान लिया है। किन्तु भाषा-प्रयोग की दृष्टि से ब्रजभाषा गद्य के प्राचीनतम नमूने सन् 1513 ई0 के पूर्व के नहीं हैं। धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों के साथ वैद्यक, ज्योतिष, इतिहास, भूगोल, गणित, धनुर्वेद, शकुन आदि विषयों का प्रतिपादन ब्रजभाषा गद्य में हुआ है। ब्रजभाषा गद्य-साहित्य स्थूलतः चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—मौलिक, टीकात्मक, अनूदित और पद्य-प्रधान रचनाओं में यत्र-तत्र प्रयुक्त टिप्पणीपरक गद्य। मौलिक (स्वतन्त्र) गद्य वल्लभ सम्प्रदाय के वचनामृतों, वार्त्ताग्रन्थों, कथा पुस्तकों, दर्शन विषयक ग्रन्थों, वैद्यक, ज्योतिष आदि उपयोगी विषयों, रचनाओं और पत्रों, शिलालेखों तथा कागज-पत्रों के रूप में उपलब्ध होता है। टीका, टिप्पणी, तिलक और भावना शीर्षक से व्याख्यात्मक गद्य प्राप्त होता है। इसी प्रकार अनुवाद अथवा छायानुवाद रूप में लिखित ग्रन्थ भी प्राप्त हैं। गद्य-प्रधान ग्रन्थों में टिप्पणीपरक गद्य चर्चा, वार्त्ता, तिलक या वचनिका शीर्षक लिखा गया है। सत्रहवीं शताब्दी तक की लिखी हुई जो रचनाएँ उपलब्ध हैं, उनमें गोस्वामी विट्ठलनाथ का 'शृंगार रस-मण्डन', गोकुलनाथ जी की 'चौरासी वैष्णवन की वार्त्ता' और 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्त्ता', नाभादास जी का 'अष्टयाम', बैकुण्ठमणि शुक्ल के 'अगहन महातम' एवं 'वैसाख महातम', ध्रुवदास कृत 'सिद्धान्त विचार' तथा लल्लूलाल कृत 'माधव विलास' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन्हीं के साथ टीकाओं की परम्परा भी चलती रही। प्रमुख टीकाएँ भुवनदीपिका टीका, एकादशस्कन्ध टीका, हितसंवर्धिनी टीका, धरनी-धरदास की टीका और लोकनाथ की गद्य-पद्यमयी टीका।

खड़ीबोली गद्य की प्रामाणिक रचनाएँ सत्रहवीं शताब्दी ई0 से प्राप्त होती हैं। इस सन्दर्भ में सन् 1623 में लिखित जटमल कृत 'गोरा बादल की कथा' उल्लेख्य है। आरम्भिक खड़ीबोली गद्य ब्रजभाषा से प्रभावित है। खड़ीबोली नाम पड़ने का कारण सम्भवतः इसका 'खरा' होना है। कुछ लोग मधुर ब्रजभाषा की तुलना में इसके कर्कश होने के कारण इसे 'खड़ीबोली' कहना उपयुक्त समझते हैं। कुछ लोगों की धारणा है कि मेरठ के आसपास की पड़ी बोली को खड़ी बनाकर लश्करों में प्रयोग किया गया, इसलिए इसे 'खड़ीबोली' कहते हैं। ब्रजभाषा के प्रभाव से मुक्त खड़ीबोली गद्य का आरम्भ उन्नीसवीं शताब्दी से माना जा सकता है। 'खड़ीबोली' गद्य का एक रूप 'दक्खिनी गद्य' का है। मुहम्मद तुगलक के समय में अच्छी संख्या में उत्तर के मुसलमान दक्षिण में जाकर बस गये। इसके साथ इनकी भाषा भी दक्षिण पहुँची और वहाँ 'दक्खिनी हिन्दी' का विकास हुआ। दक्खिनी हिन्दी में गद्य और पद्य दोनों ही लिखे गये हैं। दक्खिनी खड़ीबोली गद्य का प्रामाणिक रूप सन् 1580 से प्राप्त है। इनमें प्रायः सूफी धर्म के सिद्धान्त लिखे गये हैं।

खड़ीबोली गद्य का विकास

खड़ीबोली गद्य के प्रारम्भिक उन्नायकों में विशेष रूप से चार लेखकों का उल्लेख किया जाता है—मुंशी सदासुख लाल (राय), मुंशी इंशा अल्ला खाँ, सदल मिश्र, पंडित लल्लूलाल। इन लेखकों से कुछ पहले पटियाला दरबार के रामप्रसाद निरंजनी और मध्य प्रदेश के पं0 दौलतराम ने साधु और व्यवस्थित खड़ीबोली का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया था। रामप्रसाद निरंजनी के **'भाषा योग वाशिष्ठ'** की भाषा अधिक परिष्कृत है। मुंशी सदासुख लाल (राय) दिल्ली के रहनेवाले थे। इन्होंने विष्णुपुराण का एक अंश लेकर उसे खड़ीबोली गद्य में प्रस्तुत किया। सदा सुखलाल की रचना 'सुखसागर' है। धार्मिक ग्रंथ होने के कारण इसमें पंडिताऊपन अधिक है। वाक्य-रचना पर फारसी शैली का प्रभाव है। मुंशी इंशा अल्ला खाँ ने **'रानी केतकी की कहानी'** लिखी है। इनकी शैली हास्य प्रधान और चटपटी है। तुकान्त वाक्यों का प्रयोग अधिक है। मुंशीजी लखनऊ के नवाब सआदत अली खाँ के दरबार में रहते थे। इसलिए उनकी शैली में तड़क-भड़क, शोखी और रंगीनी अधिक है। सदल मिश्र जिला आरा (बिहार) के निवासी थे। यह कलकत्ता के फोर्ट विलियम कालेज में हिन्दी के शिक्षक के रूप में कार्य करते थे। **'नासिकेतोपाख्यान'** इनकी प्रसिद्ध रचना है। इसमें पूर्वीपन अधिक है और वाक्य-रचना शिथिल है। पं0 लल्लूलाल आगरा में रहनेवाले गुजराती ब्राह्मण थे। यह भी फोर्ट विलियम कालेज में नियुक्त थे। इनकी प्रसिद्ध रचना **'प्रेमसागर'** है। इसका गद्य ब्रजभाषा के प्रभाव से मुक्त नहीं है। कहीं-कहीं तुक-मैत्री

का मोह खटकता है। भाषा परिमार्जित नहीं है। जिस समय ये लेखक हिन्दी खड़ीबोली गद्य में कहानी और आख्यान लिख रहे थे, उसी समय ईसाई मिशनरी भी ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए बाइबिल का हिन्दी खड़ीबोली गद्य में अनुवाद कराकर उसका प्रचार कर रहे थे। जनता के जीवन में घुलमिल कर उसे अपने अनुकूल बनाने के प्रयत्न में इन लोगों ने हिन्दी भाषा की सेवा की और हिन्दी गद्य के विकास में विशेष योग दिया। सामान्यतः ईसाई मिशनरियों की भाषा भी अपरिमार्जित और ऊबड़-खाबड़ है। तात्पर्य यह है कि अठारहवीं शताब्दी ई० के अन्तिम चरण और उन्नीसवीं शताब्दी ई० के प्रथम चरण में खड़ीबोली गद्य के किसी भी लेखक की भाषा पूर्णतः परिमार्जित नहीं है। इन लेखकों का खड़ीबोली गद्य के विकास-क्रम में ऐतिहासिक महत्त्व अवश्य है।

➡ भारतीय जागरण

उन्नीसवीं शताब्दी ई० के द्वितीय एवं तृतीय चरण में हमारे देश में सामाजिक और सांस्कृतिक ढाँचे में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए। शिक्षा का पश्चिमीकरण हुआ। यातायात के साधनों में वृद्धि हुई। सामन्तवादी शासन-व्यवस्था का अन्त हुआ। अंग्रेजों की नौकरशाही पर आधृत नवीन शासन व्यवस्था ने अराजकता की स्थिति को दूर कर देश में शान्ति स्थापित की। 'प्रेसों' की स्थापना के साथ अनेक प्रकार की पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ। अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार से नवीन चेतना की लहर दौड़ गयी और अनेक सामाजिक, धार्मिक आन्दोलनों ने देश के जन-मानस को मथकर उसे आधुनिक विचारधाराओं को ग्रहण करने की स्थिति में ला दिया। इस नवीन चेतना के अभ्युदय को भारतीय जागरण (रेनेसाँ) की संज्ञा दी गयी है। इस जागरण को देशव्यापी रूप देने और इसकी गति को तीव्र करने में 'ब्रह्म समाज' (सन् 1828), 'रामकृष्ण मिशन', 'प्रार्थना समाज' (सन् 1867), 'आर्य समाज' (सन् 1867) और 'थियोसॉफिकल सोसाइटी' (सन् 1882) जैसी संस्थाओं का विशेष योगदान माना जाता है। उत्तर भारत में इस नये जागरण का आरम्भ अंग प्रदेश से हुआ। यहीं से समाचार-पत्रों के प्रकाशन की शुरुआत भी हुई। यह प्रदेश ब्रजभाषा केन्द्र से बहुत दूर पड़ता था। इसलिए नवीन चेतना को व्यक्त करने का दायित्व खड़ीबोली गद्य को ही वहन करना पड़ा। यह स्मरणीय है कि इस समय तक उत्तर भारत में पंजाब से लेकर बंग प्रदेश तक खड़ीबोली गद्य का प्रसार हो चुका था।

➡ भारतेन्दु-युगीन गद्य

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में हिन्दी साहित्य का आकाश **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** (सन् 1850-1885) के पूर्ण प्रकाश से जगमगा उठा। उससे कुछ वर्ष पूर्व हिन्दी खड़ीबोली गद्य के क्षेत्र में दो महत्त्वपूर्ण व्यक्ति गद्य की दो भिन्न-भिन्न शैलियों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। एक थे राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द (सन् 1823-1895), दूसरे थे राजा लक्ष्मणसिंह (सन् 1826-1896)। राजा शिवप्रसाद ने हिन्दी को पाठशालाओं के पाठ्यक्रम में स्थान दिलाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया था। वे हिन्दी का प्रचार तो चाहते थे किन्तु उसे अधिक नफ़ीस बनाकर उर्दू जैसा रूप प्रदान करने के पक्ष में थे। दूसरी ओर राजा लक्ष्मणसिंह संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के पक्षपाती थे। भारतेन्दु ने इन दोनों सीमान्तों के बीच का मार्ग ग्रहण किया। उन्होंने हिन्दी गद्य को वह रूप प्रदान किया जो हिन्दी-प्रदेश की जनता की मनोभावना के अनुकूल था। उनका गद्य व्यावहारिक, सजीव और प्रवाहपूर्ण है। उन्होंने यथासंभव लोक-प्रचलित शब्दावली का प्रयोग किया है। उनके वाक्य छोटे-छोटे और व्यंजक हैं। कहावतों, लोकोक्तियों और मुहावरों के यथोचित प्रयोग से उनकी भाषा प्राणवान् और स्वाभाविक बन गयी है। इतना होने पर भी भारतेन्दु का गद्य पूर्ण परिमार्जित नहीं है। उनका गद्य भी ब्रजभाषा के प्रयोगों से प्रभावित है और कहीं-कहीं व्याकरण की त्रुटियाँ खटकती हैं।

भारतेन्दु के सहयोगी

भारतेन्दुजी का व्यक्तित्त्व अत्यन्त प्रभावशाली था। वे सुलझे हुए व्यक्ति थे। लोक की गति को पहचानते थे। जनता की भावनाओं को समझते थे और देश एवं जाति की उन्नति के लिए सर्वस्व अर्पित करने के लिए तत्पर रहते थे। उनके समकालीन लेखक उन्हें अपना आदर्श मानते थे। बालकृष्ण भट्ट (सन् 1844-1914), पं० प्रतापनारायण मिश्र (सन् 1856-1894), राधाचरण गोस्वामी (सन् 1859-1925), बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' (सन् 1855-1923), ठाकुर जगमोहन सिंह (सन् 1857-1899), राधाकृष्णदास (सन् 1865-1907), किशोरीलाल गोस्वामी (सन् 1865-1932) आदि गद्य लेखक उनसे प्रेरित और प्रभावित थे। इन सभी लेखकों ने हिन्दी गद्य के विकास में पूरा सहयोग दिया। ये सभी गद्य लेखक पत्रकार भी थे। इनका उद्देश्य उद्बोधन, आह्वान, व्याख्या, टिप्पणी

आदि के द्वारा जनता को शिक्षित और प्रबुद्ध करना था। पं० बालकृष्ण भट्ट इलाहाबाद से 'हिन्दी प्रदीप' नामक मासिक पत्र निकालते थे। इस पत्र में उनके निबंध प्रकाशित होते थे। भट्टजी संस्कृत के पंडित और अंग्रेजी के जानकार थे। उनकी भाषा-नीति उदार थी। आवश्यकतानुसार उन्होंने अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत एवं लोकभाषा सभी से शब्द लिये हैं। उनका व्यक्तित्त्व खरा था। इसलिए उनकी शैली में भी मृदुता के स्थान पर खरापन है। प्रतापनारायण मिश्र कानपुर से 'ब्राह्मण' पत्र निकालते थे। वे मनमौजी व्यक्ति थे। उनकी शैली में उनका फक्कड़पन स्पष्ट है। उनकी भाषा पर बैसवाड़ी बोली का विशेष प्रभाव है। उनकी भाषा में ठेठ ग्रामीण प्रयोग अधिक मिलते हैं। बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' 'आनन्दकादम्बिनी' का सम्पादन करते थे। उनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ और शैली काव्यात्मक एवं अलंकृत है। उनके वाक्य लम्बे और समास-बहुल हैं। भारतेन्दु के अन्य सहयोगियों ने भाषा एवं शैली के सम्बन्ध में इन्हीं लेखकों का आदर्श सामने रखा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हिन्दी गद्य के विकास की दृष्टि से भारतेन्दु युग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

➥ द्विवेदी-युगीन गद्य

सन् 1900 तक भारतेन्दु युग की समाप्ति मानी जाती है। सन् 1900 से 1922 तक अर्थात् शताब्दी के प्रथम चरण को हिन्दी साहित्य में द्विवेदी-युग माना जाता है। इस युग को जागरण-सुधार काल भी कहा गया है। हिन्दी गद्य साहित्य के इतिहास में **पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी** (सन् 1864-1938) का आविर्भाव एक महत्त्वपूर्ण घटना है। द्विवेदीजी रेलवे के एक साधारण कर्मचारी थे। उन्होंने स्वेच्छा से हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, मराठी और बंगला भाषाओं का अध्ययन किया था। सन् 1903 में आपने रेलवे की नौकरी छोड़कर 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन आरम्भ किया। 'सरस्वती' के माध्यम से आपने हिन्दी साहित्य की अभूतपूर्व सेवा की। द्विवेदीजी ने व्याकरणनिष्ठ, संयमित, सरल, स्पष्ट और विचारपूर्ण गद्य के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की, भाषा के प्रयोगों में एकरूपता लाने और उसे व्याकरण के अनुशासन में लाकर व्यवस्थित करने में द्विवेदीजी ने स्तुत्य प्रयास किया। इसी समय बाबू बालमुकुन्द गुप्त उर्दू से हिन्दी में आये। उन्होंने हिन्दी गद्य को मुहावरेदार सजीव और परिष्कृत करने में पूरा-पूरा ध्यान दिया। 'अनस्थिरता' शब्द के प्रयोग को लेकर द्विवेदीजी से उनका विवाद प्रसिद्ध है। इस युग में द्विवेदीजी के अतिरिक्त माधव मिश्र, गोविन्द नारायण मिश्र, पद्मसिंह शर्मा, सरदार पूर्णसिंह, बाबू श्यामसुन्दर दास, मिश्रबन्धु, लाला भगवानदीन, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि लेखकों ने हिन्दी गद्य के विकास में योग दिया। इस युग में गद्य साहित्य के विभिन्न रूपों का विकास हुआ और गंभीर निबंध, विवेचनापूर्ण आलोचनाएँ तथा मौलिक कहानियाँ, उपन्यास और नाटक लिखे गये। इसी युग में काशी में बाबू श्यामसुन्दर दास ने 'नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना की और हिन्दी के उपयोगी एवं गंभीर साहित्य के निर्माण की दिशा में स्तुत्य प्रयास किया। 'सरस्वती' के अतिरिक्त 'इन्दु', 'सुदर्शन', 'समालोचक', 'प्रभा', 'मर्यादा', 'माधुरी' आदि पत्रिकाएँ इसी युग में प्रकाशित हुईं। द्विवेदी युग के उत्तरार्द्ध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और बाबू गुलाब राय ने चिन्तन-प्रधान गद्य के विकास में उल्लेखनीय कार्य किया। द्विवेदी युग में गद्य शैली के अनेक रूप सामने आये। पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी की साफ-सुथरी, संयमित, परिमार्जित प्रसन्न-शैली; बाबू श्यामसुन्दर दास की औदात्यपूर्ण व्यास शैली; गोविन्द नारायण मिश्र की तत्सम प्रधान, समास बहुल, पांडित्यपूर्ण शैली; बालमुकुन्द गुप्त की ओजस्वी, प्रवाहपूर्ण, तीखी, व्यंग्य शैली; मिश्र बन्धुओं की सूचना-प्रधान, तथ्यान्वेषिणी शैली; पद्मसिंह शर्मा की प्रशंसात्मक शैली; सरदार पूर्णसिंह की लाक्षणिक एवं आवेगशील शैली; चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की पांडित्यपूर्ण, व्यंग्यमयी शैली; गणेश शंकर विद्यार्थी की मर्मस्पर्शी, ओजस्विता, मूर्तविधायिनी शैली; पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी की सुबोध और रमणीय गद्य-शैली; आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की चिन्तन-प्रधान, आत्मविश्वासमंडित, तत्त्वान्वेषिणी, समास शैली और बाबू गुलाब राय की सहज हास्यपूर्ण तथा विषयानुसार विचार-प्रधान एवं संयमित शैली के वैविध्य-पूर्ण विधान से द्विवेदी-युगीन गद्य-साहित्य अद्भुत गरिमा से मंडित हो गया है।

➥ छायावाद-युगीन गद्य

सन् 1919 में पंजाब के जलियाँवाला बाग में आयोजित सभा में निहत्थी तथा असहाय जनता को गोलियों से भून दिया गया। 1920 ई० में गाँधीजी ने व्यापक असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया, किन्तु लगभग दो वर्ष बाद ही यह आन्दोलन स्थगित कर दिया गया। कुछ वर्ष बाद सन् 1931 में सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी भगतसिंह को फाँसी दी गयी। इन घटनाओं ने

राष्ट्रीय चेतना को और दृढ़ किया। युवकों का कल्पनाशील मानस कुछ कर गुजरने के लिए तड़पने लगा। इस युग में पराधीनता और विवशता की अनुभूति से आकुल होकर यदि कभी वेदना और पीड़ा के गीत गाये गये, तो दूसरे ही क्षण स्वाधीनता के लिए सतत संघर्ष की बलवती प्रेरणा से उत्साहित होकर स्फूर्ति और आत्म-विश्वास की भावना को मुखरित किया गया। द्विवेदी युग सब मिलाकर नैतिक मूल्यों के आग्रह का युग था। इसलिए नवीन भावनाओं से प्रेरित युग-लेखक इसकी प्रतिक्रिया-स्वरूप भाव-तरल, कल्पना-प्रधान एवं स्वच्छन्द चेतना से युक्त साहित्य रचना में प्रवृत्त हुए। यह प्रवृत्ति कविता और गद्य दोनों ही क्षेत्रों में लक्षित होती है। सन् 1919 से 1938 तक के काल-खण्ड को हिन्दी साहित्य के इतिहास में छायावाद-युग नाम दिया गया है। इस युग की सीमा में रचित गद्य अधिक कलात्मक हो गया है। उसकी अभिव्यंजना-शक्ति विकसित हुई है। वह चित्रण-प्रधान, लाक्षणिक, अलंकृत और कवित्वपूर्ण हो गया है। उसमें अनुभूति की सघनता और भावों की तरलता है। उसकी प्रकृति अन्तर्मुखी हो गयी है। रायकृष्णदास, वियोगी हरि, महाराजकुमार डॉ0 रघुवीर सिंह, पं0 माखनलाल चतुर्वेदी, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, 'पंत', 'निराला', नन्ददुलारे वाजपेयी, बेचन शर्मा 'उग्र', शिवपूजन सहाय आदि गद्य-लेखकों ने छायावाद-युगीन गद्य-साहित्य को समृद्ध किया है। द्विवेदी युग के उत्तरार्द्ध में जो लेखक सामने आये थे वे छायावाद-युग में भी लिखते रहे और उनकी प्रौढ़तम रचनाएँ इसी युग में पुस्तकाकार प्रकाशित हुईं। इनमें आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, बाबू गुलाब राय तथा पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी प्रमुख हैं। इनकी साहित्य चेतना का मूल स्वर द्विवेदी-युगीन ही है, किन्तु छायावाद युग के अतीत प्रेम, सहज रहस्यमयता और लाक्षणिकता के महत्त्व को इन लेखकों ने भी स्वीकार किया है। उपर्युक्त लेखकों में राय कृष्णदास और वियोगी हरि अपने भावपूर्ण प्रतीकात्मक गद्यगीतों के लिए, महाराजकुमार डॉ0 रघुवीर सिंह अपनी अतीतोन्मुखी भावतरल रहस्यात्मक कल्पना के लिए, माखनलाल चतुर्वेदी अपनी प्रखर राष्ट्रीयता एवं स्वच्छन्द आलंकारिक-शैली के लिए, जयशंकर प्रसाद अपने मर्मस्पर्शी कल्पनाचित्र के लिए, 'पंत' अपनी सुकुमार कल्पना और नाद-सौन्दर्य-प्रधान गद्य के लिए, 'निराला' अपनी अद्‌भुत व्यंग्यात्मकता और सहानुभूतिप्रवण रेखांकन क्षमता के लिए, महादेवी वर्मा अपनी करुण, संवेदना एवं मर्मस्पर्शी चित्र-विधान के लिए, नन्ददुलारे वाजपेयी अपने गंभीर अध्ययन और स्वतंत्र चिन्तन के लिए, बेचन शर्मा 'उग्र' अपनी तीखी प्रतिक्रिया और आवेगपूर्ण नाटकीय शैली के लिए तथा शिवपूजन सहाय अपनी ग्रामीण सरलता के लिए स्मरणीय हैं।

➡ छायावादोत्तर-युगीन गद्य

सन् 1936 के बाद देश की स्थिति में तेजी से परिवर्तन आरम्भ हुआ। सन् 1937 में कांग्रेस ने पूरे देश में अपने व्यापक प्रभाव का परिचय देते हुए छह प्रान्तों में अपना मंत्रिमंडल बना लिया। एक बार ऐसा लगा कि हम स्वतंत्रता के द्वार पर खड़े हैं। किन्तु शीघ्र ही निराश होना पड़ा। सन् 1939 में द्वितीय महायुद्ध आरम्भ हो गया। कांग्रेस ने इंग्लैण्ड को युद्ध में सहायता देना इस शर्त पर स्वीकार किया कि वह शीघ्र भारत में एक स्वतंत्र जनतंत्रवादी सरकार की स्थापना करे। ब्रिटिश सरकार की ओर से कोई संतोषजनक प्रतिक्रिया न होने पर सन् 1939 में कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने त्यागपत्र दे दिया। सन् 1940 में आचार्य विनोबा भावे के नेतृत्व में व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ किया गया। सन् 1942 में 'क्रिप्स-मिशन' भारत आया और अपने उद्‌देश्य में असफल रहा। इसी वर्ष कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो' का ऐतिहासिक प्रस्ताव पास किया। देश में उग्र आन्दोलन हुआ और ब्रिटिश सरकार ने उसका पूरी शक्ति से दमन किया। सन् 1945 में महायुद्ध समाप्त हुआ। सन् 1947 में भारत में विदेशी सत्ता का अन्त हुआ किन्तु इसके साथ ही देश का विभाजन भी हो गया। विभाजन के परिणामस्वरूप भीषण साम्प्रदायिक दंगे हुए और देश की जनता तबाह हुई। इन घटनाओं ने हिन्दी साहित्य को बहुत दूर तक प्रभावित किया। सन् 1936 के बाद से ही हम कल्पना के लोक से उतर कर ठोस जमीन पर आने की चेष्टा करने लगे थे। मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित लेखकों ने प्रगतिवादी साहित्य-सृजन के प्रति प्रतिबद्धता दिखायी थी।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना से प्रेरित लेखकों ने भी क्रमशः यथार्थवादी जीवन-दर्शन को महत्त्व देना आरम्भ किया। छायावादी युग के कई लेखक नयी भूमि पर पदार्पण कर नवीन युग-चेतना के अनुसार साहित्य रचना में प्रवृत्त हुए। फलस्वरूप सन् 1938 के बाद 'छायावाद' का अन्त हुआ। उसके बाद के साहित्य को छायावादोत्तर साहित्य कहा गया है। छायावादोत्तर-युग के साहित्यकार स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पूर्व से लिखते आ रहे थे और उसके बाद भी सक्रिय रहे हैं। इनमें आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, शान्तिप्रिय द्विवेदी, रामधारीसिंह 'दिनकर', यशपाल, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, जैनेन्द्र, 'अज्ञेय', नगेन्द्र, रामवृक्ष बेनीपुरी, बनारसीदास चतुर्वेदी, वासुदेवशरण अग्रवाल, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', भगवतशरण उपाध्याय आदि गद्य-लेखक हैं।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के गद्य में पांडित्य और चिन्तन के साथ ही सहजता एवं सरसता का अद्‌भुत समन्वय है। भाषा पर द्विवेदीजी का असाधारण अधिकार है। उन्होंने हिन्दी गद्य में बाणभट्ट की समास-गुंफित ललित पदावली अवतरित कर उसे अद्‌भुत गरिमा प्रदान की है। शान्तिप्रिय द्विवेदी अपनी प्रभावग्राहिणी प्रज्ञा और भावोच्छ्वसित शैली के लिए प्रसिद्ध हैं। दिनकर के गद्य में विचारशीलता, विषयवैविध्य एवं व्यक्तित्त्व-व्यंजना तीनों का समन्वय है। यशपाल और 'अश्क' का गद्य सामाजिक यथार्थ के विविध स्तरों को व्यक्त करने से समर्थ है। भगवतीचरण वर्मा का गद्य सामाजिक, सहज, व्यावहारिक, प्रवाहपूर्ण एवं व्यंग्यगर्भित है। अमृतलाल नागर के गद्य में लखनवी तर्ज की एक विशेष प्रकार की रवानी है। मूलतः कथाकार होने के नाते इन लेखकों में वर्णनात्मक शैली का विशेष आकर्षण है। जैनेन्द्र का गद्य उनकी दार्शनिक मुद्रा और मनोवैज्ञानिक निगूढ़ता के लिए विख्यात है। 'अज्ञेय' अपनी बौद्धिकता के लिए प्रसिद्ध हैं। उनका गद्य चिन्तन-प्रधान एवं परिष्कृत होने के साथ ही व्यक्तित्व-व्यंजक और व्यंग्यगर्भित भी है। उन्होंने हिन्दी गद्य को आधुनिक परिवेश से जोड़ने का सफल प्रयास किया है। डॉ0 नगेन्द्र का गद्य सामान्यतः तर्क-प्रधान, विश्लेषण-परक और आत्मविश्वास की गरिमा से पूर्ण होता है किन्तु उसमें सन्दर्भ के अनुकूल नाटकीयता, व्यंग्य तथा बिम्ब-विधान भी लक्षित किया जा सकता है। रामवृक्ष बेनीपुरी अपने शब्द-चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं। ग्रामीण जीवन की निश्छल अभिव्यक्ति उनके गद्य को प्राणवान् बना देती है। बनारसीदास चतुर्वेदी की ख्याति उनके संस्मरणों, जीवनियों और रेखाचित्रों के लिए है। उनकी शैली रोचक और भाषा प्रवाहपूर्ण है। उनके छोटे-छोटे वाक्य अनुभव खण्डों को चित्रवत् प्रस्तुत करते चलते हैं। वासुदेवशरण अग्रवाल का गद्य सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक गरिमा से मंडित है। उसमें विद्वत्ता, विचारशीलता और सरसता का अद्‌भुत समन्वय है। कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' अपने राजनीतिक संस्मरणों और रिपोर्ताजों के लिए प्रसिद्ध हैं। करुणा, व्यंग्य और भावुकता के समावेश से उनका गद्य अत्यन्त आकर्षक हो गया है। भगवतशरण उपाध्याय इतिहास के चिरस्मरणीय घटनाओं को भावपूर्ण नाटकीय शैली में प्रस्तुत करने में समर्थ हैं। उनका गद्य उनके इतिहास-ज्ञान एवं संस्कृति-बोध का परिचायक है।

➡ स्वातन्त्र्योत्तर-युगीन गद्य

इस युग के लेखकों में विद्यानिवास मिश्र, हरिशंकर परसाई, फणीश्वरनाथ 'रेणु', कुबेरनाथ राय, धर्मवीर भारती, शिवप्रसाद सिंह आदि उल्लेखनीय हैं। विद्यानिवास मिश्र अपनी मांगलिक दृष्टि, सांस्कृतिक चेतना, लोक-सम्पृक्ति एवं आधुनिक जीवन-बोध के लिए प्रसिद्ध हैं। उनका गद्य उनके व्यक्तित्त्व को साकार कर देता है। हरिशंकर परसाई ने सामाजिक और राजनीतिक जीवन की विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य किया है। उन्होंने हिन्दी गद्य की व्यंग्य क्षमता को निखारा है। 'रेणु' का गद्य ध्वनि-बिम्बों के माध्यम से वातावरण को सजीव बनाने में सक्षम है। कुबेरनाथ राय ने आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की गद्य-परम्परा को आगे बढ़ाया है। प्राचीन सांस्कृतिक एवं साहित्यिक सन्दर्भों को नयी अर्थवत्ता प्रदान करके श्री राय ने हिन्दी गद्य को नयी भाव-भूमि प्रदान की है। धर्मवीर भारती गंभीर एवं विचारपूर्ण गद्य लिखते रहे हैं। यात्रावृत्त, रिपोर्ताज तथा व्यंग्य-विद्रूप लिखकर उन्होंने अपने गद्य को अपेक्षाकृत हल्की मनःस्थितियों से जोड़ने की चेष्टा की है। शिवप्रसाद सिंह लोक-चेतना से सम्पृक्त होते हुए भी व्यापक दृष्टि-सम्पन्न लेखक हैं। उनका गद्य मानव सम्बन्धी चेतना का वाहक है। इन लेखकों ने हिन्दी गद्य को सशक्त बनाया है, उसकी शब्द-सम्पदा में वृद्धि की है। उसे जीवन की बाह्य परिस्थितियों, सामाजिक सम्बन्धों, विसंगतियों, आधुनिक मानव के आंतरिक द्वन्द्वों एवं तनावों को व्यक्त करने में सक्षम बनाया है, अनेक नवीन कलात्मक गद्य-विधाओं का विकास किया है और सब मिला कर उसे राष्ट्रीय गरिमा प्रदान की है। अब हिन्दीतर प्रदेशों के लेखक भी हिन्दी में रुचि लेने लगे हैं। विदेशों में भी हिन्दी का प्रचार बढ़ रहा है। हिन्दी का भविष्य अब उज्ज्वल है और उसके विश्व-स्तर पर प्रतिष्ठित होने की संभावना बढ़ गयी है।

हिन्दी गद्य की विधाएँ

हिन्दी गद्य की विधाओं को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है। एक वर्ग प्रमुख विधाओं का है। इसमें नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, निबंध और आलोचना को रखा जा सकता है। दूसरा वर्ग गौण या प्रकीर्ण गद्य-विधाओं का है। इसके अन्तर्गत जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्त, गद्य-काव्य, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, डायरी, भेंटवार्त्ता, पत्र-साहित्य आदि का उल्लेख किया जा सकता है। प्रमुख विधाओं में 'नाटक', 'उपन्यास', 'कहानी' तथा 'निबंध' और 'आलोचना' का आरम्भ तो भारतेन्दु युग (सन् 1870-1900) में ही हो गया था। किन्तु गौण या प्रकीर्ण गद्य-विधाओं में कुछ का विकास द्विवेदी-युग और शेष का छायावाद और छायावादोत्तर-

युग में हुआ है। द्विवेदी युग में 'जीवनी', 'यात्रावृत्त', 'संस्मरण' और 'पत्र साहित्य' का आरम्भ हो गया था। छायावाद-युग में 'गद्य-काव्य', 'संस्मरण' और 'रेखाचित्र' की विधाएँ विशेष समृद्ध हुईं। छायावादोत्तर-युग में प्रकीर्ण गद्य-विधाओं का अभूतपूर्व विकास हुआ है। 'आत्मकथा', 'रिपोर्ताज', 'भेंटवार्त्ता', 'व्यंग्य-विद्रूप-लेखन', 'डायरी', 'एकालाप' आदि अनेक विधाएँ छायावादोत्तर-युग में विकसित और समृद्ध हुई हैं। यहाँ यह स्मरणीय है कि प्रमुख गद्य विधाएँ अपनी रूप-रचना में एक दूसरे से सर्वथा स्वतंत्र हैं, किन्तु प्रकीर्ण गद्य-विधाओं में से अनेक निबंध विधा से पारिवारिक सम्बन्ध रखती हैं। एक ही परिवार से सम्बद्ध होने के कारण यह एक-दूसरे के पर्याप्त निकट प्रतीत होती हैं।

(क) प्रमुख विधाएँ

➡ नाटक

रंगमंच पर अभिनय द्वारा प्रस्तुत करने की दृष्टि से लिखी गयी तथा पात्रों एवं संवादों पर आधारित एक से अधिक अंकोंवाली दृश्यात्मक साहित्यिक रचना को नाटक कहते हैं। नाटक वस्तुतः रूपक का एक भेद है। रूप का आरोप होने के कारण नाटक को रूपक कहा गया है। अभिनय के समय नट पर दुष्यन्त या राम जैसे ऐतिहासिक पात्र का आरोप किया जाता है, इसीलिए इसे रूपक कहते हैं। नट (अभिनेता) से सम्बद्ध होने के कारण इसे नाटक कहते हैं। नाटक में ऐतिहासिक पात्र-विशेष की शारीरिक एवं मानसिक अवस्था का अनुकरण किया जाता है। आज नाटक शब्द अंग्रेजी 'ड्रामा' या 'प्ले' का पर्याय बन गया है। हिन्दी में मौलिक नाटकों का आरम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है। द्विवेदी युग में इसका अधिक विकास नहीं हुआ। छायावाद-युग में जयशंकर प्रसाद ने ऐतिहासिक नाटकों के विकास में महत्त्वपूर्ण योग दिया। छायावादोत्तर-युग में लक्ष्मी नारायण मिश्र, उदयशंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ अश्क, सेठ गोविन्ददास, डॉ0 रामकुमार वर्मा, जगदीशचन्द्र माथुर, मोहन राकेश आदि ने इस विधा को विकसित किया है। नाटकों का एक महत्त्वपूर्ण रूप एकांकी है। 'एकांकी' किसी एक महत्त्वपूर्ण घटना, परिस्थिति या समस्या को आधार बनाकर लिखा जाता है और उसकी समाप्ति एक ही अंक में उस घटना के चरम क्षणों को मूर्त करते हुए कर दी जाती है। हिन्दी में एकांकी नाटकों का विकास छायावाद युग से माना जाता है। सामान्यतः श्रेष्ठ नाटककारों ने ही श्रेष्ठ एकांकियों की भी रचना की है।

➡ उपन्यास

हिन्दी में 'उपन्यास' शब्द का आविर्भाव संस्कृत के 'उपन्यस्त' शब्द से हुआ है। उपन्यास शब्द का शाब्दिक अर्थ है— सामने रखना। उपन्यास में 'प्रसादन' अर्थात् प्रसन्न करने का भाव भी निहित है। किसी घटना को इस प्रकार सामने रखना कि उससे दूसरों को प्रसन्नता हो, उपन्यस्त करना कहा जायेगा। किन्तु इस अर्थ में 'उपन्यास' का प्रयोग आजकल नहीं होता। हिन्दी में 'उपन्यास' अंग्रेजी 'नावेल' का पर्याय बन गया है। हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास लाला श्रीनिवासदास कृत **'परीक्षा गुरु'** माना जाता है। प्रेमचन्दजी ने हिन्दी उपन्यास को सामयिक-सामाजिक-जीवन से सम्बद्ध करके एक नया मोड़ दिया था। वे 'उपन्यास' को मानव-चरित्र का चित्र समझते थे। उनकी दृष्टि में 'मानव-चरित्र' पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है। वस्तुतः उपन्यास गद्य साहित्य की वह महत्त्वपूर्ण कलात्मक विधा है जो मनुष्य को उसकी समग्रता में व्यक्त करने में समर्थ है। प्रेमचन्द के बाद जैनेन्द्र, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय, यशपाल, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, नरेश मेहता, फणीश्वरनाथ रेणु, धर्मवीर भारती, राजेन्द्र यादव आदि लेखकों ने हिन्दी उपन्यास साहित्य को समृद्ध किया है।

➡ कहानी

जीवन के किसी मार्मिक तथ्य को नाटकीय प्रभाव के साथ व्यक्त करनेवाली, अपने में पूर्ण कलात्मक गद्य-विधा को कहानी कहा जाता है। हिन्दी में मौलिक कहानियों का आरम्भ 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन के बाद हुआ। कहानी या आख्यायिका हमारे देश के लिए नयी चीज नहीं है। पुराणों में शिक्षा, नीति एवं हास्य-प्रधान अनेक आख्यायिकाएँ उपलब्ध होती हैं, किन्तु आधुनिक साहित्यिक कहानियाँ उद्देश्य और शिल्प में उनसे भिन्न हैं। आधुनिक कहानी जीवन के किसी मार्मिक तथ्य को नाटकीय प्रभाव के साथ व्यक्त करनेवाली अपने में पूर्ण एक कलात्मक गद्य-विधा है जो पाठक को अपनी यथार्थपरता और मनोवैज्ञानिकता के कारण निश्चित रूप से प्रभावित करती है। हिन्दी कहानी के विकास में प्रेमचन्द का महत्त्वपूर्ण योगदान है। प्रेमचन्दोत्तर या छायावादोत्तर

युग में जैनेन्द्र, 'अज्ञेय', इलाचन्द्र जोशी, यशपाल, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, अमरकान्त, मोहन राकेश, फणीश्वरनाथ 'रेणु', द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण', शिवप्रसाद सिंह, धर्मवीर भारती, मन्नू भण्डारी, शिवानी, निर्मल वर्मा आदि लेखकों ने इस दिशा को अधिक कलात्मक और समृद्ध बनाया है।

➡ आलोचना

आलोचना का शाब्दिक अर्थ है—किसी वस्तु को भली प्रकार देखना। भली प्रकार देखने से किसी वस्तु के गुण-दोष प्रकट होते हैं। इसलिए किसी साहित्यिक रचना को भली प्रकार देखकर उसके गुण-दोषों को प्रकट करना उसकी आलोचना करना है। आलोचना के लिए 'समीक्षा' शब्द भी प्रचलित है। इसका भी लगभग यही अर्थ है। हिन्दी में आलोचना अंग्रेजी के 'क्रिटिसिज्म' शब्द का पर्याय बन गया है। भारतीय काव्य-चिन्तन के क्षेत्र में सैद्धान्तिक या शास्त्रीय आलोचना का विशेष महत्त्व रहा है। हमारा यह पक्ष अत्यन्त समृद्ध और पुष्ट है। हिन्दी में आधुनिक पद्धति की आलोचना का आरम्भ भारतेन्दु युग में बालकृष्ण भट्ट और बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' द्वारा लाला श्रीनिवासदास कृत 'संयोगिता स्वयंवर' नाटक की आलोचना से माना जाता है। आगे चलकर द्विवेदी युग में पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी, मिश्र बन्धु, बाबू श्यामसुन्दर दास, पद्मसिंह शर्मा, लाला भगवानदीन आदि ने इस क्षेत्र में विशेष कार्य किया। हिन्दी आलोचना का उत्कर्ष आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना कृतियों के प्रकाशन से मान्य है। आचार्य शुक्ल के बाद बाबू गुलाब राय, पं० नन्ददुलारे वाजपेयी, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ० नगेन्द्र और डॉ० रामविलास शर्मा की हिन्दी आलोचना के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

➡ निबंध

हिन्दी में निबंध शब्द अंग्रेजी के 'एसे' शब्द के पर्याय के रूप में व्यवहृत होता है। 'एसे' शब्द का अर्थ है—प्रयास। अर्थात् किसी विषय के सम्बन्ध में कुछ कहने का प्रयास ही 'एसे' है। 'प्रयास' होने के कारण 'एसे' या निबंध अपने मूलरूप में प्रौढ़ रचना नहीं मानी गयी है। यह शिथिल मनःस्थिति में लिखित अव्यवस्थित और ढीली-ढाली रचना समझी जाती है। व्यवहार में विचार-प्रधान गंभीर लेखों तथा भाव-प्रधान आत्म-व्यंजक रचनाओं, दोनों के लिए निबंध शब्द का प्रयोग होता है। निबंध को परिभाषित करते हुए बाबू गुलाबराय ने कहा है—"निबंध उस गद्य-रचना को कहते हैं जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छन्दता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति और सम्बद्धता के साथ किया गया हो।" निबंध मुख्यतः चार प्रकार के माने गये हैं–

1. **वर्णनात्मक**—इसमें किसी वस्तु को स्थिर रूप में देखकर उसका वर्णन किया जाता है।
2. **विवरणात्मक**—इसमें किसी वस्तु को उसके गतिशील रूप में देखकर उसका वर्णन किया जाता है।
3. **विचारात्मक**—इसमें विचार और तर्क की प्रधानता होती है।
4. **भावात्मक**—यह भाव-प्रधान होता है। इसमें आवेगशीलता होती है।

वस्तुतः निबंध-लेखक के व्यक्तित्त्व के अनुसार निबंध-रचना के अनेक प्रकार हो सकते हैं। यह भेद सुविधा की दृष्टि से निबंधों को मोटे तौर पर वर्गीकृत करने के लिए किये गये हैं।

हिन्दी में निबंध-रचना का आरम्भ भारतेन्दु-युग से ही माना जाता है। भारतेन्दु-युग में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट और बालमुकुन्द गुप्त ने अनेक विषयों से सम्बन्धित सुन्दर निबंध लिखे थे। उसके बाद महावीरप्रसाद द्विवेदी, बाबू श्यामसुन्दर दास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, बाबू गुलाबराय, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी आदि ने इस विधा को विकसित और समृद्ध किया। आचार्य शुक्ल के बाद आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, रामधारीसिंह 'दिनकर', वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ० नगेन्द्र, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय आदि लेखकों ने हिन्दी निबंध की परम्परा को आगे बढ़ाया।

(ख) गौण या प्रकीर्ण विधाएँ

गौण विधाओं का एक-दूसरे से निकट का सम्बन्ध है। ये सभी एक प्रकार से निबंध-परिवार में आती हैं। प्रायः सभी का सम्बन्ध लेखक के व्यक्तिगत जीवन और उसके परिवेश से है। लेखक अपने देश-काल और परिवेश के प्रति जितने ही संवेदनशील

होंगे, गौण कही जानेवाली विधाओं का उतना ही विकास होगा। सम्प्रति हिन्दी गद्य में इन विधाओं की रचना प्रचुर परिमाण में हो रही है। इसलिए हिन्दी गद्य के साम्प्रतिक स्वरूप को समझने के लिए इन विधाओं के विकास का ज्ञान आवश्यक है।

➡ जीवनी

सफल जीवनी के लिए आवश्यक है कि किसी महान् व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक की घटनाओं को काल-क्रम से इस रूप में प्रस्तुत करना कि उस व्यक्ति का व्यक्तित्व निखर उठे। जीवनी-लेखक तटस्थ रहता है। वह अपनी प्रतिक्रियाएँ व्यक्त नहीं करता। यों तो हिन्दी में जीवनी लेखन का कार्य भारतेन्दु युग में ही आरम्भ हो गया था, किन्तु आदर्श जीवनियाँ बहुत बाद में लिखी गयीं। द्विवेदी-युग में ऐतिहासिक पुरुषों और धार्मिक नेताओं की जीवनियाँ अधिक लिखी गयीं। इस युग के जीवनी-लेखकों में लक्ष्मीधर वाजपेयी, सम्पूर्णानन्द, नाथूराम प्रेमी, मुकुन्दीलाल वर्मा उल्लेखनीय हैं। छायावाद युग में राष्ट्रीय महापुरुषों—लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, गाँधी, जवाहरलाल नेहरू आदि की जीवनियाँ अधिक लिखी गयीं। इस युग के जीवनी-लेखकों में रामनरेश त्रिपाठी, गणेश शंकर विद्यार्थी, मन्मथनाथ गुप्त, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद और मुंशी प्रेमचन्द उल्लेखनीय हैं। छायावादोत्तर-युग में लोकप्रिय नेताओं, संत-महात्माओं, विदेशी महापुरुषों, वैज्ञानिकों, खिलाड़ियों और साहित्यकारों की जीवनियाँ लिखी गयीं। इस युग के जीवनी-लेखकों में काका कालेलकर, जैनेन्द्र कुमार, रामनाथ सुमन, रामवृक्ष बेनीपुरी, बनारसीदास चतुर्वेदी, राहुल सांकृत्यायन विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इधर अमृत राय, शान्ति जोशी, रामविलास शर्मा और विष्णु प्रभाकर ने क्रमशः 'कलम का सिपाही', 'सुमित्रानन्दन पंत—जीवनी और साहित्य', 'निराला की साहित्य साधना' तथा 'आवारा मसीहा' लिखकर साहित्यकारों की आदर्श जीवनियाँ प्रस्तुत करने की परम्परा का श्रीगणेश किया है।

➡ आत्मकथा

जब लेखक अपने जीवन को स्वयं प्रस्तुत करता है तो वह 'आत्मकथा' लिखता है। स्वयं अपने को निर्मम भाव से प्रस्तुत करना कठिन कार्य है। इसलिए आदर्श आत्मकथा लिखना भी कठिन कार्य है। बीती हुई घटनाओं को क्रमबद्ध रूप में स्मृति के आधार पर प्रस्तुत करना और उनके साथ ही तटस्थ रहकर आत्म-निरीक्षण करना सरल नहीं है, हिन्दी में यों तो स्वयं भारतेन्दु ने 'एक कहानी कुछ आप बीती कुछ जग बीती' लिखकर इस दिशा में प्रयोग आरम्भ किया भी, किन्तु यह प्रयोग अधूरा रह गया। हिन्दी की आदर्श आत्मकथाएँ छायावाद और छायावादोत्तर युग में लिखी गयी हैं। इस क्षेत्र में बाबू श्यामसुन्दर दास कृत 'मेरी आत्म कहानी', वियोगी हरि कृत 'मेरा जीवन प्रवाह', राजेन्द्र बाबू कृत 'मेरी आत्मकथा', यशपाल कृत 'सिंहावलोकन', पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' कृत 'अपनी खबर', बाबू गुलाब राय कृत 'मेरी असफलताएँ, वृन्दावनलाल वर्मा कृत 'अपनी कहानी', 'पन्त' कृत 'साठ वर्ष एक रेखांकन' और लोकप्रिय कवि बच्चन कृत 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' तथा 'नीड़ का निर्माण फिर' उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

➡ यात्रावृत्त

जब लेखक अपने जीवन की अविस्मरणीय यात्राओं का विवरण आत्म-कथात्मक शैली में प्रस्तुत करता है तो वह 'यात्रा साहित्य' की सृष्टि करता है। आदर्श यात्रावृत्त वह माना जाता है जिसमें यात्रा-क्रम में आये हुए स्थान और बीती हुई घटनाएँ लेखक की स्मृति संवेदना का अंग बनकर चित्रवत् अंकित होती जाती हैं। यात्रावृत्त आत्मकथा का अंश भी हो सकता है और स्वतंत्र रूप से भी लिखा जा सकता है। यात्रावृत्त में 'आत्मकथा', 'संस्मरण' और 'रिपोर्ताज' तीनों के तत्त्व पाये जाते हैं। हिन्दी में 'यात्रावृत्त' लिखने का क्रम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से प्रारम्भ होता है किन्तु कलात्मक यात्रावृत्त छायावाद और छायावादोत्तर-युग में लिखे गये हैं। इस क्षेत्र में राहुल सांकृत्यायन, देवेन्द्र सत्यार्थी, 'अज्ञेय', यशपाल, नगेन्द्र, मोहन राकेश, निर्मल वर्मा आदि के द्वारा प्रस्तुत यात्रावृत्त उल्लेखनीय हैं।

➡ गद्यगीत या गद्यकाव्य

गद्यगीत में भक्ति, प्रेम, करुणा आदि भावनाएँ छोटे-छोटे कल्पना-चित्रों के माध्यम से अन्योक्ति या प्रतीक पद्धति पर व्यक्त की जाती हैं। अनुभूति की सघनता, भावाकुलता, संक्षिप्तता, रहस्यमयता तथा सांकेतिकता श्रेष्ठ गद्यगीत की विशेषताएँ हैं। हिन्दी

में गद्य-गीतों का आरम्भ राय कृष्णदास के 'साधना संग्रह' के प्रकाशन से हुआ। इसके बाद वियोगी हरि का 'तरंगिणी' संग्रह प्रकाशित हुआ। ये दोनों कृतियाँ द्विवेदी-युग की सीमा में आती हैं। इसके बाद छायावाद-युग में गद्य-गीतों की रचना अधिक हुई। राय कृष्णदास और वियोगी हरि के अतिरिक्त चतुरसेन शास्त्री, वृन्दावनलाल वर्मा, 'अज्ञेय' और डॉ० रामकुमार वर्मा ने भी गद्यगीतों के क्षेत्र में अच्छे प्रयोग किये। छायावादोत्तर-युग में दिनेशनंदिनी डालमिया, डॉ० रघुवीर सिंह, तेज नारायण काक, रामवृक्ष बेनीपुरी आदि ने सुन्दर गद्य-गीतों की रचना की।

➡ संस्मरण

जब लेखक अपने निकट सम्पर्क में आनेवाले महत् विशिष्ट, विचित्र, प्रिय और आकर्षक व्यक्तियों, घटनाओं या दृश्यों को स्मृति के सहारे पुनः कल्पना में मूर्त करता है और उसे शब्दांकित करता है तब वह संस्मरण लिखता है। संस्मरण लिखते समय लेखक पूर्णतः तटस्थ नहीं रह पाता। याद आनेवाले का अंकन करते हुए वह स्वयं भी अंकित हो जाता है। संस्मरण-लेखक के लिए संवेदनशील, प्रभावग्राही और व्यक्ति या वस्तु के वैशिष्ट्य को लक्षित करनेवाला होना चाहिए। हिन्दी में आदर्श संस्मरण छायावादोत्तर-युग में लिखे गये हैं। इस क्षेत्र में श्रीराम शर्मा, महादेवी वर्मा, रामवृक्ष बेनीपुरी, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', देवेन्द्र सत्यार्थी, बनारसीदास चतुर्वेदी आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

➡ रेखाचित्र

रेखाचित्र में भी किसी व्यक्ति, वस्तु या सन्दर्भ का चित्रांकन किया जाता है। इसमें सांकेतिकता अधिक होती है। जिस प्रकार रेखा-चित्रकार थोड़ी सी रेखाओं को प्रयोग करके किसी व्यक्ति, वस्तु या सन्दर्भ की मूलभूत विशेषता को उभार देता है उसी प्रकार लेखक कम से कम शब्दों का प्रयोग करके किसी व्यक्ति या वस्तु की मूलभूत विशेषता को उभार देता है। रेखाचित्र में लेखक का पूर्णतः तटस्थ होना आवश्यक है। वस्तुतः संस्मरण और रेखाचित्र एक-दूसरे से मिलती-जुलती विधाएँ हैं। संस्मरण में भी चित्र-शैली का ही प्रयोग किया जाता है किन्तु रेखाचित्र में चित्र अधूरा या खंडित भी हो सकता है, जबकि संस्मरण में चित्र छोटा या लघु भले हो उसे अपने आप में पूर्ण बनाकर प्रस्तुत किया जाता है। संस्मरण अभिधामूलक होता है किन्तु रेखाचित्र सांकेतिक और व्यंजक होता है। वस्तुतः रेखाचित्र संस्मरण का कलात्मक विकास है। हिन्दी में महादेवी वर्मा, प्रकाश चन्द्र गुप्त, रामवृक्ष बेनीपुरी, बनारसीदास चतुर्वेदी, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', विनयमोहन शर्मा, विष्णु प्रभाकर और डॉ० नगेन्द्र के रेखाचित्र उल्लेखनीय हैं।

➡ रिपोर्ताज

रिपोर्ट के कलात्मक और साहित्यिक रूप को ही रिपोर्ताज कहते हैं। रिपोर्ताज में समसामयिक घटनाओं को उनके वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। रिपोर्ताज लेखक का घटना से प्रत्यक्ष साक्षात्कार आवश्यक है। इसलिए युद्ध की विभीषिका, अकाल की छाया या पूरे मानव समाज को प्रभावित करनेवाली अन्य महत्त्वपूर्ण घटनाओं के घटित होने पर पत्रकार और साहित्यकार उस घटना के अनेक संदर्भों की प्रत्यक्ष जानकारी हासिल करते हैं और उन्हें रिपोर्ताज शैली में प्रस्तुत करके पाठक के मन को झकझोर देते हैं। हिन्दी में रिपोर्ताज लिखने का प्रचलन छायावादोत्तर युग में हुआ है। इस क्षेत्र में रांगेय राघव, बालकृष्ण राव, धर्मवीर भारती, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', 'विष्णुकांत शास्त्री आदि लेखकों के नाम उल्लेखनीय हैं।

➡ डायरी

जब लेखक तिथि-विशेष में घटित घटना-चक्र को यथातथ्य रूप में अथवा अपनी संक्षिप्त प्रतिक्रिया या टिप्पणी के साथ लिख लेता है तो यह लेखन डायरी विधा के रूप में स्वीकार किया जाता है। डायरी कुछ महत्त्वपूर्ण तिथियों में घटित घटनाओं को लेकर भी लिखी जा सकती है और क्रमबद्ध रूप में रोजनामचा के रूप में भी लिखी जा सकती है। उसका आकार कुछ पंक्तियों तक ही सीमित हो सकता है और कई पृष्ठों तक विस्तृत भी। वह स्वतंत्र रूप से भी लिखी जा सकती है और कहानी, उपन्यास या यात्रावृत्त के अंग के रूप में भी। डायरी मूलतः लेखक की निजी वस्तु है। इसमें उसे अपने निजी विचार, दृष्टि, उद्भावना और प्रतिक्रिया व्यक्त करने की छूट है। यह दूसरी बात है कि जिस लेखक का सारा जीवन ही सार्वजनिक हो, उसकी डायरी भी सार्वजनिक बातों को लेकर लिखी जाय। कभी-कभी डायरी घटित तथ्य को आधार न बनाकर संभावित और काल्पनिक सत्य को लेकर भी लिखी

जाती है। इसमें शिल्प डायरी का होता है किन्तु तथ्याधार सार्वजनिक होता है। हिन्दी में डायरी विधा का आरम्भ छायावादी-युग से मान्य है। इस सन्दर्भ में धीरेन्द्र वर्मा कृत 'मेरी कालेज डायरी' उल्लेखनीय है। छायावादोत्तर-युग में इलाचन्द्र जोशी, रामधारीसिंह 'दिनकर, शमशेर बहादुर सिंह, मोहन राकेश आदि की डायरियाँ प्रकाशित हुई हैं। हिन्दी में गद्य की इस कलात्मक विधा का अभी पूर्ण विकास नहीं हुआ है।

➡ भेंटवार्त्ता

जब किसी महान् दार्शनिक, राजनीतिज्ञ या साहित्यकार से मिलकर साहित्य, दर्शन या राजनीति के विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न किये जाते हैं और उनसे प्राप्त उत्तरों को व्यवस्थित ढंग से लिपिबद्ध कर लिया जाता है तो भेंटवार्त्ता की सृष्टि होती है। भेंटवार्त्ता वास्तविक भी होती है और काल्पनिक भी। भेंट-वार्त्ताओं में जिस व्यक्ति से भेंट की जाती है उसके स्वभाव, रुचि, कार्य-कुशलता, बुद्धिमत्ता तथा अपनी उत्सुकता, संभ्रमता आदि का उल्लेख करके लेखक भेंट-वार्त्ताओं को अधिक रुचिकर बना सकता है। हिन्दी में वास्तविक और काल्पनिक दोनों ही प्रकार की भेंट-वार्त्ताएँ लिखी गयी हैं। वास्तविक भेंटवार्त्ता लिखनेवालों में पद्मसिंह शर्मा और रणवीर साँगा के नाम उल्लेखनीय हैं। काल्पनिक भेंट-वार्त्ता लिखनेवालों में राजेन्द्र यादव (चैखव : एक इण्टरव्यू) और श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन (भगवान् महावीर : एक इण्टरव्यू) उल्लेखनीय हैं। भेंट-वार्त्ताएँ छायावादोत्तर-युग में ही लिखी गयी हैं। अभी हिन्दी में इस विधा के विकास की पूरी संभावना है।

➡ पत्र-साहित्य

जब लेखक अपने किसी मित्र, परिचित या अल्प परिचित व्यक्ति को अपने सम्बन्ध में या किसी महत्त्वपूर्ण समस्या के सम्बन्ध में उसकी और अपनी सामाजिक स्थिति को ध्यान में रखकर उचित आदर, सम्मान या स्नेह का भाव प्रकट करते हुए निजी तौर पर मात्र सूचना, जिज्ञासा या समाधान लिखकर भेजता है और उत्तर की अपेक्षा रखता है तो वह पत्र-साहित्य का सृजन करता है। पत्र नितांत निजी हो सकते हैं और सार्वजनिक भी। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ भेजे जानेवाले पत्र प्रायः सार्वजनिक प्रश्नों को लेकर लिखे जाते हैं। साहित्यिक दृष्टि से वे पत्र अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं जो प्रकाशनार्थ नहीं लिखे जाते और मात्र दो व्यक्तियों की बीच की वस्तु होते हैं। हिन्दी साहित्य में पत्र-प्रकाशन का आरम्भ द्विवेदी युग में ही हो गया था। महात्मा मुंशीराम ने स्वामी दयानन्द सम्बन्धी पत्रों का संकलन सन् 1904 में प्रकाशित कराया था। छायावाद-युग में रामकृष्ण आश्रम, देहरादून से 'विवेकानन्द पत्रावली' का प्रकाशन किया गया। छायावादोत्तर युग में पत्र-साहित्य के संकलन और प्रकाशन की दिशा में कई महत्त्वपूर्ण कार्य हुए हैं। इस क्षेत्र में बैजनाथ सिंह 'विनोद' द्वारा संकलित 'द्विवेदी पत्रावली' (सन् 1954), बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा संकलित 'पद्मसिंह शर्मा के पत्र' (सन् 1956), वियोगी हरि द्वारा संकलित 'बड़ों के प्रेरणादायक कुछ पत्र' (सन् 1960), जानकीवल्लभ शास्त्री द्वारा संकलित 'निराला के पत्र' (सन् 1971), हरिवंश राय बच्चन द्वारा संकलित 'पंत के दो सौ पत्र बच्चन के नाम' (सन् 1971) उल्लेखनीय पत्र संकलन हैं। उक्त विधाओं के अतिरिक्त संप्रति हिन्दी गद्य-साहित्य में 'अभिनन्दन एवं स्मृति ग्रंथ', 'टिप्पणी लेखन', 'लघु कथा', 'एकालाप' आदि अनेक गद्य विधाएँ विकसित हो रही हैं।

आज जीवन की संकुलता और मानवीय सम्बन्धों की जटिलता के कारण अनेक छोटी-छोटी गद्य-विधाओं के विकसित होने की सम्भावना बढ़ गयी है। इसके साथ ही गद्य-शैली में विविधता और उसकी अभिव्यक्ति-भंगिमा में अनेकरूपता आयी है। हिन्दी-गद्य यथार्थोन्मुख हुआ है। उसकी शब्द-सम्पदा में निरन्तर वृद्धि हो रही है। वाक्य-रचना में लचीलापन आया है। आज वह बाह्य-जगत् की विराटता और आन्तरिक जीवन की गहनता, जटिलता और सूक्ष्मता को व्यक्त करने में समर्थ है। यह हिन्दी गद्य के सशक्त और समृद्ध होने का शुभ लक्षण है।

●●

हिन्दी गद्य के विकास पर आधारित प्रश्न

● **निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए–**

1. **'चौरासी वैष्णवन की वार्त्ता' के रचयिता हैं–**
   (i) विट्ठलनाथ (ii) गोकुलनाथ (iii) नाभादास (iv) चतुर्भुजदास।
2. **'आनन्द कादम्बिनी' के सम्पादक थे–**
   (i) बालकृष्ण भट्ट (ii) प्रतापनारायण मिश्र
   (iii) राधाचरण गोस्वामी (iv) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'।
3. **बाबू गुलाबराय की आत्मकथा है–**
   (i) कुछ आपबीती, कुछ जगबीती (ii) मेरा जीवन प्रवाह
   (iii) मेरी असफलताएँ (iv) अपनी खबर।
4. **राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' की रचना है–**
   (i) भाग्यवती (ii) नासिकेतोपाख्यान (iii) राजा भोज का सपना (iv) प्रेमसागर।
5. **'तट की खोज' रचना है–**
   (i) राय कृष्णदास की (ii) सरदार पूर्णसिंह की (iii) हरिशंकर परसाई की (iv) मोहन राकेश की।
6. **खड़ीबोली गद्य की प्रथम रचना है–**
   (i) कृष्णावतार स्वरूप निर्णय (ii) गोरा-बादल की कथा
   (iii) वर्ण रत्नाकर (iv) भाषा योगवाशिष्ठ।
7. **'सौ अजान एक सुजान' के लेखक हैं–**
   (i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ii) प्रतापनारायण मिश्र
   (iii) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (iv) बालकृष्ण भट्ट।
8. **'ब्राह्मण' पत्रिका प्रकाशित हुई–**
   (i) द्विवेदी युग में (ii) छायावाद युग में (iii) भारतेन्दु युग में (iv) पूर्व-भारतेन्दु युग में।
9. **'अपनी खबर' पुस्तक की विधा है–**
   (i) संस्मरण (ii) रेखाचित्र (iii) जीवनी (iv) आत्मकथा।
10. **हिन्दी की प्रथम डायरी है–**
    (i) मेरी कालिज-डायरी (ii) डायरी के पन्ने
    (iii) नरदेव शास्त्री की जेल-डायरी (iv) तूफानों के बीच।
11. **'अमेरिका का मस्त योगी वाल्ट ह्विटमैन' निबन्ध है–**
    (i) हरिशंकर परसाई का (ii) राय कृष्णदास का
    (iii) सरदार पूर्णसिंह का (iv) प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी का।
12. **'निस्सहाय हिन्दू' रचना है–**
    (i) राय कृष्णदास (ii) बालकृष्ण भट्ट (iii) श्रीनिवास दास (iv) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।
13. **'चन्द्रावली' के रचयिता हैं–**
    (i) रामचन्द्र शुक्ल (ii) सेठ गोविन्द दास (iii) श्यामसुन्दर दास (iv) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।
14. **'साहित्य-सहचर' के लेखक हैं–**
    (i) महावीरप्रसाद द्विवेदी (ii) हजारीप्रसाद द्विवेदी (iii) बाबू गुलाबराय (iv) जयशंकर 'प्रसाद'।
15. **'माधुरी' पत्रिका किस युग से सम्बन्धित है?**
    (i) शुक्ल युग से (ii) शुक्लोत्तर युग से (iii) द्विवेदी युग से (iv) भारतेन्दु युग से।

16. 'एकांकी-सम्राट' कहा जाता है—
(i) रामकुमार वर्मा को (ii) सेठ गोविन्द दास को (iii) हरिकृष्ण प्रेमी को (iv) मोहन राकेश को।

17. 'आवारा मसीहा' गद्य-विधा की रचना है—
(i) उपन्यास (ii) कहानी (iii) नाटक (iv) जीवनी।

18. 'रानी केतकी की कहानी' के रचनाकार हैं—
(i) लल्लूलाल (ii) सदल मिश्र
(iii) इंशा अल्ला खाँ (iv) मुंशी सदासुख लाल।

19. रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखा गया ग्रन्थ है—
(i) हिन्दी साहित्य का आदिकाल (ii) हिन्दी भाषा का इतिहास
(iii) हिन्दी साहित्य का इतिहास (iv) देवनागरी का इतिहास।

20. 'नागरी प्रचारिणी सभा' के संस्थापक हैं—
(i) पुरुषोत्तमदास टंडन (ii) मदनमोहन मालवीय (iii) श्यामसुन्दर दास (iv) रामचन्द्र शुक्ल।

21. 'सरस्वती' के प्रथम सम्पादक हैं—
(i) महावीरप्रसाद द्विवेदी (ii) श्यामसुन्दर दास
(iii) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी (iv) हरदेव बाहरी।

22. निम्नलिखित रचनाओं में से कौन-सी रचना कहानी है?
(i) त्याग-पत्र (ii) भाग्य और पुरुषार्थ (iii) पुरस्कार (iv) आन का मान।

23. निम्नलिखित में से कौन द्विवेदीकालीन गद्य लेखक/लेखिका हैं?
(i) महादेवी वर्मा (ii) सरदार पूर्णसिंह (iii) सियारामशरण गुप्त (iv) अज्ञेय।

24. 'आवारा मसीहा' के रचनाकार कौन हैं?
(i) रामवृक्ष बेनीपुरी (ii) रांगेय राघव (iii) विष्णु प्रभाकर (iv) राहुल सांकृत्यायन।

25. आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी द्वारा सम्पादित कौन-सी पत्रिका थी?
(i) हंस (ii) सरस्वती (iii) ब्राह्मण (iv) इन्दु।

26. 'मेरी असफलताएँ' किस विधा की रचना है?
(i) जीवनी साहित्य (ii) कहानी (iii) डायरी (iv) आत्मकथा।

27. 'अम्बपाली' किस विधा की रचना है?
(i) कहानी (ii) उपन्यास (iii) नाटक (iv) संस्मरण।

28. निम्नलिखित रचनाओं में से कौन-सी रचना नाटक है?
(i) नमक का दरोगा (ii) गोदान (iii) आखिरी चट्टान (iv) राजमुकुट।

29. निम्नलिखित रचनाओं में कौन छायावादी युग का गद्य लेखक है?
(i) प्रतापनारायण मिश्र (ii) हजारीप्रसाद द्विवेदी
(iii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (iv) नन्ददुलारे वाजपेयी।

30. 'बहू की विदा' के रचनाकार हैं—
(i) सेठ गोविन्ददास (ii) हरिकृष्ण प्रेमी (iii) मोहन राकेश (iv) विनोद रस्तोगी।

31. बालकृष्ण भट्ट द्वारा सम्पादित पत्रिका है—
(i) कवि वचन सुधा (ii) हिन्दी प्रदीप (iii) विशाल भारत (iv) साहित्य संदेश।

32. 'ध्रुवस्वामिनी' किस विधा की रचना है?
(i) उपन्यास (ii) नाटक (iii) एकांकी (iv) कहानी।

33. निम्नलिखित में से भारतेन्दुयुगीन गद्य लेखक हैं—
(i) रघुवीर सिंह (ii) जयशंकर प्रसाद
(iii) भगवत शरण उपाध्याय (iv) प्रतापनारायण मिश्र।

34. 'साधना' के रचनाकार कौन हैं?
(i) वृन्दावनलाल वर्मा (ii) मोहन राकेश
(iii) राय कृष्णदास (iv) विनयमोहन शर्मा।

35. जैनेन्द्र कुमार द्वारा रचित निबंध है–
(i) पृथिवीपुत्र (ii) पूर्वोदय (iii) कुली (iv) पथ के साथी।

36. 'रूपक रहस्य' के लेखक कौन हैं? अथवा
'रूपक रहस्य' किसकी रचना है?
(i) श्यामसुन्दर दास (ii) वियोगी हरि
(iii) रामचन्द्र शुक्ल (iv) महावीरप्रसाद द्विवेदी।

37. बदरी नारायण चौधरी 'प्रेमघन' द्वारा सम्पादित पत्रिका है–
(i) सरस्वती (ii) आनन्द कादम्बिनी (iii) प्रथा (iv) हिन्दी प्रदीप।

38. 'अंधेर नगरी' के रचनाकार कौन हैं?
(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ii) जयशंकर प्रसाद
(iii) हरिकृष्ण प्रेमी (iv) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'।

39. 'शेखर एक जीवनी' के लेखक कौन हैं?
(i) जयशंकर प्रसाद (ii) भीष्म साहनी (iii) भगवतीचरण वर्मा (iv) अज्ञेय।

40. निम्न में से 'ब्राह्मण' पत्रिका के सम्पादक कौन हैं?
(i) बालकृष्ण भट्ट (ii) महावीरप्रसाद द्विवेदी (iii) प्रतापनारायण मिश्र (iv) श्यामसुन्दर दास।

41. इनमें से कौन नाटक नहीं है?
(i) राजमुकुट (ii) गरुड़ध्वज (iii) अपना-अपना भाग्य (iv) आन का मान।

42. डॉ० सम्पूर्णानन्द द्वारा सम्पादित पत्रिका है–
(i) सरस्वती (ii) धर्मयुग (iii) मर्यादा (iv) हंस।

43. निम्नलिखित में से जीवनी है–
(i) नीड़ का निर्माण फिर (ii) आवारा मसीहा (iii) अतीत के चलचित्र (iv) चिंतामणि।

44. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा सम्पादित पत्र है–
(i) हिन्दी प्रदीप (ii) समालोचक (iii) हंस (iv) ब्राह्मण।

45. 'गोदान' किस विधा की रचना है?
(i) उपन्यास (ii) नाटक (iii) आत्मकथा (iv) डायरी।

46. निम्नलिखित में कौन-सी रचना नाटक है?
(i) जीवन कण (ii) करुणा (iii) सती (iv) स्कन्दगुप्त।

47. 'परदा' कहानी के लेखक कौन हैं?
(i) प्रेमचन्द (ii) जयशंकर प्रसाद (iii) अमरकान्त (iv) यशपाल।

48. जयशंकर प्रसाद किसके लेखक हैं?
(i) कुटज (ii) ध्रुवस्वामिनी (iii) आत्मनेपद (iv) आषाढ़ का एक दिन।

49. 'गबन' के लेखक कौन हैं?
(i) भीष्म साहनी (ii) भगवतीचरण वर्मा (iii) प्रेमचन्द (iv) अज्ञेय।

50. पं० लल्लूलाल की कौन-सी रचना है?
(i) प्रेमसागर (ii) सुखसागर (iii) रानी केतकी की कहानी (iv) परीक्षा गुरु।

51. नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना किस युग में हुई?
(i) भारतेन्दु युग में (ii) द्विवेदी युग में (iii) छायावाद युग में (iv) छायावादोत्तर युग में।

52. 'प्रेमसागर' के रचनाकार हैं–
(i) सदल मिश्र (ii) सूरदास (iii) रामप्रसाद निरंजनी (iv) लल्लूलाल।

53. 'घुमक्कड़शास्त्र' के रचनाकार कौन हैं?
(i) राहुल सांकृत्यायन (ii) विद्यानिवास मिश्र (iii) डॉ० नगेन्द्र (iv) वृन्दावनलाल वर्मा।

54. 'कुटज' के रचयिता कौन हैं?
(i) अज्ञेय (ii) हजारीप्रसाद द्विवेदी (iii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (iv) यशपाल।

55. श्यामसुन्दर दास का जन्मकाल है–
(i) 1850 ई० (ii) 1864 ई० (iii) 1875 ई० (iv) 1881 ई०।

56. 'अष्टयाम' के रचनाकार हैं–
(i) गोकुलनाथ (ii) वल्लभाचार्य (iii) नाभादास (iv) तुलसीदास।

57. डॉ० रामविलास शर्मा की रचना का क्या नाम है?
(i) निराला की साहित्य साधना (ii) मेरा परिवार (iii) पर्वतों के देश में (iv) चिन्तामणि।

58. 'मेरी जीवन यात्रा' किस लेखक की आत्मकथा है?
(i) वियोगी हरि (ii) राहुल सांकृत्यायन (iii) रामवृक्ष बेनीपुरी (iv) महादेवी वर्मा।

59. 'हिन्दी प्रदीप' पत्रिका के सम्पादक कौन हैं?
(i) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ii) डॉ० श्यामसुन्दर दास (iii) बालकृष्ण भट्ट (iv) बाबू गुलाबराय।

60. 'द्विवेदी-युग' के साहित्यकार कौन हैं?
(i) डॉ० श्यामसुन्दर दास (ii) भगवतीचरण वर्मा (iii) यशपाल (iv) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

61. 'चिन्तामणि' किस विधा की रचना है?
(i) उपन्यास (ii) कहानी (iii) निबन्ध (iv) नाटक।

62. 'आधुनिक हिन्दी नाटक' के लेखक कौन हैं?
(i) बदरीनारायण चौधरी (ii) डॉ० नगेन्द्र (iii) रामचन्द्र शुक्ल (iv) महादेवी वर्मा।

63. 'पतितों के देश में' किस साहित्यकार की रचना है?
(i) राहुल सांकृत्यायन (ii) रामवृक्ष बेनीपुरी
(iii) कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर (iv) डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी।

64. निम्नलिखित में से कौन 'जीवनी' है?
(i) अतीत के चलचित्र (ii) चिन्तामणि (iii) आवारा मसीहा (iv) नीड़ का निर्माण फिर।

65. डॉ० सम्पूर्णानन्द द्वारा सम्पादित पत्रिका का नाम है–
(i) धर्मयुग (ii) हंस (iii) सरस्वती (iv) मर्यादा।

66. भारतेन्दु के सहयोगी लेखक हैं–
(i) शिवपूजन सहाय (ii) बालकृष्ण भट्ट (iii) वियोगी हरि (iv) हजारीप्रसाद द्विवेदी।

67. 'चिन्तामणि' के रचनाकार हैं–
(i) श्यामसुन्दर दास (ii) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (iii) प्रेमचन्द (iv) गुलाब राय।

68. 'दीपदान' नामक रचना है–
(i) नाटक (ii) भेंटवार्त्ता (iii) लघुकथा (iv) एकांकी।

69. स्वामी दयानन्द सरस्वती की रचना है–
(i) भूदान यज्ञ (ii) भोर का तारा (iii) सत्यार्थ प्रकाश (iv) भारत-भारती।

70. हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास है–
(i) आनन्द मठ (ii) परीक्षागुरु (iii) गबन (iv) तितली।

71. हिन्दी गद्य (खड़ीबोली) के जन्मदाता हैं–
(i) प्रतापनारायण मिश्र (ii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (iii) श्यामसुन्दर दास (iv) जयशंकर प्रसाद।

72. आलोचना के क्षेत्र में सर्वाधिक उल्लेखनीय है–
(i) मिश्रबन्धु (ii) गुलाबराय (iii) सुदर्शन (iv) रामचन्द्र शुक्ल।

73. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की रचना है–
(i) अशोक के फूल (ii) वनमाला (iii) चिन्तामणि (iv) विद्यासुन्दर।

74. 'भाग्यवती' उपन्यास के लेखक हैं–
(i) श्रद्धाराम फुल्लौरी (ii) प्रेमचन्द (iii) अमृतलाल नागर (iv) रामप्रसाद निरंजनी।

75. महावीरप्रसाद द्विवेदी का जीवन-काल है–
(i) सन् 1864-1938 (ii) सन् 1862-1935 (iii) सन् 1875-1947 (iv) सन् 1854-1925

76. 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' में किस विभागाध्यक्ष के बाद रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी विभाग के अध्यक्ष हुए?
(i) करुणापति त्रिपाठी (ii) हजारीप्रसाद द्विवेदी (iii) श्यामसुन्दर दास (iv) विजयपाल सिंह।

77. काका कालेलकर का नाम किस विधा के लेखक के रूप में प्रसिद्ध है?
(i) निबन्ध (ii) संस्मरण (iii) आत्मकथा (iv) डायरी।

78. हजारीप्रसाद द्विवेदी को किस सन् में पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया गया?
(i) सन् 1957 (ii) सन् 1959 (iii) सन् 1963 (iv) सन् 1950

79. निम्नलिखित में से 'जीवनी' है–
(i) बसेरे से दूर (ii) अनामदास का पोथा (iii) कलम का सिपाही (iv) शाश्वती।

80. छायावादोत्तर युग का प्रारम्भ माना जाता है–
(i) 1900 ई० से (ii) 1920 ई० से (iii) 1938 ई० से (iv) 1950 ई० से।

81. 'अरे यायावर रहेगा याद' के लेखक हैं–
(i) यशपाल (ii) नगेन्द्र (iii) मुक्तिबोध (iv) अज्ञेय।

82. कौन-सी रचना हजारीप्रसाद द्विवेदी की नहीं है?
(i) अशोक के फूल (ii) हिन्दी काव्यधारा
(iii) हिन्दी साहित्य (iv) हिन्दी साहित्य की भूमिका।

83. आदिकाल की रचना नहीं है–
(i) उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण (ii) गोरा बादल की कथा (iii) राउलवेल।

84. हिन्दी कहानी एक नयी दिशा की ओर मुड़ी–
(i) सन् 1900 में (ii) सन् 1910 में (iii) सन् 1920 में (iv) सन् 1935 में।

85. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनन्तर समर्थ निबन्धकार हैं–
(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ii) लाला श्रीनिवास (iii) महावीरप्रसाद द्विवेदी (iv) डॉ० नगेन्द्र।

86. उपन्यास विधा की रचना है–
(i) नीड़ का निर्माण फिर (ii) बाणभट्ट की आत्मकथा (iii) कलम का सिपाही (iv) पथ के साथी।

87. 'राष्ट्र का स्वरूप' के रचनाकार हैं–
(i) पूर्णसिंह (ii) रामवृक्ष बेनीपुरी (iii) वासुदेवशरण अग्रवाल (iv) 'अज्ञेय'।

88. 'कर्मभूमि' रचना है–
(i) प्रेमचन्द की (ii) यशपाल की
(iii) किशोरीलाल गोस्वामी की (iv) बालकृष्ण भट्ट की।

89. 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' आत्मकथा है–
(i) सुमित्रानन्दन पंत की (ii) डॉ० राजेन्द्रप्रसाद की (iii) हरिवंशराय 'बच्चन' की (iv) 'अज्ञेय' की।

90. पं० लल्लूलाल अध्यापक नियुक्त थे–
(i) फोर्ट विलियम कालेज में (ii) मेरठ कालेज, मेरठ में
(iii) रुड़की विश्वविद्यालय में (iv) काशी विश्वविद्यालय में।

91. 'विषस्य विषमौषधम्' निम्नलिखित में से है–
(i) कहानी (ii) उपन्यास (iii) नाटक (iv) निबन्ध।

92. 'नासिकेतोपाख्यान' के लेखक (रचनाकार) हैं–
(i) मुंशी इंशा अल्ला खाँ (ii) लल्लूलाल (iii) सदल मिश्र (iv) मुंशी सदासुखलाल।

93. 'रूपक रहस्य' के लेखक हैं–
(i) वियोगी हरि (ii) रामचन्द्र शुक्ल (iii) श्यामसुन्दर दास (iv) महावीरप्रसाद द्विवेदी।

94. द्विवेदी युग का नामकरण हुआ है–
(i) महावीरप्रसाद द्विवेदी के नाम पर (ii) हजारीप्रसाद द्विवेदी के नाम पर
(iii) जयशंकर प्रसाद के नाम पर (iv) रामकुमार वर्मा के नाम पर।

95. 'परीक्षागुरु' की रचना-विधा है–
(i) कहानी (ii) उपन्यास (iii) नाटक (iv) जीवनी।

96. निम्न में से नाटककार हैं—
(i) रामचन्द्र शुक्ल (ii) मोहन राकेश (iii) डॉ० नगेन्द्र (iv) महादेवी वर्मा।
97. 'गिरती दीवारें' के रचनाकार हैं—
(i) उपेन्द्रनाथ 'अश्क' (ii) शिवप्रसाद सिंह (iii) 'अज्ञेय' (iv) रामविलास शर्मा।
98. 'प्रजा हितैषी' समाचार-पत्र का सम्पादन किया—
(i) हजारीप्रसाद द्विवेदी ने (ii) राजा लक्ष्मण सिंह ने
(iii) 'अज्ञेय' ने (iv) शिवप्रसाद 'सितारे हिन्द' ने।
99. छायावादोत्तर युग के गद्य लेखक हैं—
(i) जयशंकर प्रसाद (ii) माखनलाल चतुर्वेदी (iii) वासुदेवशरण अग्रवाल (iv) महावीरप्रसाद द्विवेदी।
100. सन् 1957 में 'पद्मभूषण' से अलंकृत हुए—
(i) राय कृष्णदास (ii) विद्यानिवास मिश्र (iii) 'अज्ञेय' (iv) हजारीप्रसाद द्विवेदी।
101. डॉ० सम्पूर्णानन्द को मंगलाप्रसाद पुरस्कार प्राप्त हुआ—
(i) गणेश पर (ii) चिद्विलास पर
(iii) समाजवाद पर (iv) 'आर्यों का आदि देश' पर।
102. 'बेकन विचार-माला' अनूदित ग्रन्थ है—
(i) राहुल सांकृत्यायन का (ii) महावीरप्रसाद द्विवेदी का
(iii) वासुदेवशरण अग्रवाल का (iv) मोहन राकेश का।
103. 'कन्यादान' निबन्ध के लेखक हैं—
(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ii) हजारीप्रसाद द्विवेदी (iii) डॉ० सम्पूर्णानन्द (iv) सरदार पूर्णसिंह।
104. विधा की दृष्टि से 'बोल्गा से गंगा' है—
(i) उपन्यास (ii) कहानी-संग्रह (iii) यात्रावृत्तान्त (iv) आत्मकथा।
105. अज्ञेय का 'सन्नाटा' शीर्षक लेख उनके किस निबन्ध-संग्रह में संकलित है?
(i) त्रिशंकु (ii) आत्मनेपद
(iii) सब रंग और कुछ राग (iv) लिखि कागद कोरे।
106. हिन्दी साहित्य में व्यंग्य के आधार-स्तम्भ हैं—
(i) श्यामसुन्दर दास (ii) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
(iii) हरिशंकर परसाई (iv) रामवृक्ष बेनीपुरी।
107. खलील जिब्रान के 'दि मैड मैन' कृति का 'पगला' नाम से हिन्दी में अनुवाद किया है—
(i) राय कृष्णदास (ii) रामवृक्ष बेनीपुरी (iii) राहुल सांकृत्यायन (iv) 'अज्ञेय'।
108. साहित्य का 'श्रेय और प्रेय' निबन्ध-संग्रह है—
(i) डॉ० सम्पूर्णानन्द (ii) जैनेन्द्र कुमार (iii) वासुदेवशरण अग्रवाल (iv) श्यामसुन्दर दास।
109. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' की विधा है—
(i) रेखाचित्र (ii) आत्मकथा (iii) उपन्यास (iv) निबन्ध।
110. मोहन राकेश का निबन्ध-संग्रह है—
(i) आलोक पर्व (ii) पूर्वोदय (iii) रसज्ञ रंजन (iv) बकलम खुद।
111. 'नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना में योगदान है—
(i) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ii) श्यामसुन्दर दास (iii) रामनारायण मिश्र (iv) शिवकुमार सिंह।
112. अंग्रेजी के 'स्केच' का रूपान्तरण है—
(i) जीवनी (ii) भेंटवार्त्ता (iii) रेखाचित्र (iv) रिपोर्ताज।
113. 'आनन्द की खोज और पागल पथिक' का सम्बन्ध किस विधा से है?
(i) संस्मरण (ii) निबन्ध (iii) गद्य-गीत (iv) आलोचना।
114. हिन्दी की पहली कहानी माना जाता है—
(i) नमक का दरोगा (ii) उसने कहा था (iii) कफन (iv) इन्दुमती।

115. 'तुम चन्दन हम पानी' किस विधा की रचना है?
(i) नाटक (ii) संस्मरण (iii) आत्मकथा (iv) निबन्ध।

116. आधुनिक काल के प्रमुख नाटककार माने जाते हैं–
(i) मोहन राकेश (ii) लक्ष्मीनारायण मिश्र (iii) जयशंकर प्रसाद (iv) डॉ० रामकुमार वर्मा।

117. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचना है–
(i) वैदिक हिंसा हिंसा न भवति (ii) कलि कौतुक (iii) नूतन ब्रह्मचारी (iv) प्रेम मोहिनी।

118. 'चिद्विलास' के लेखक हैं–
(i) रामकुमार वर्मा (ii) डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी (iii) डॉ० सम्पूर्णानन्द (iv) मोहन राकेश।

119. सदल मिश्र की रचना है–
(i) भारत दुर्दशा (ii) नासिकेतोपाख्यान (iii) बैताल पचीसी (iv) सुख सागर।

120. 'नीड़ का निर्माण फिर' विधा है–
(i) कहानी (ii) यात्रावृत्तान्त (iii) उपन्यास (iv) आत्मकथा।

121. 'द्विवेदी युग' के लेखक हैं–
(i) अज्ञेय (ii) किशोरीलाल गोस्वामी
(iii) हरिशंकर परसाई (iv) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'।

122. 'डायरी विधा' के लेखक हैं–
(i) शमशेर बहादुर सिंह (ii) राहुल सांकृत्यायन (iii) सदल मिश्र (iv) सरदार पूर्णसिंह।

123. 'मजदूरी और प्रेम' रचना किस विधा से सम्बन्धित है?
(i) नाटक (ii) कहानी (iii) निबन्ध (iv) उपन्यास।

124. चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की प्रसिद्ध कहानी है–
(i) पंचलाइट (ii) उसने कहा था (iii) पुरस्कार (iv) आत्माराम।

125. द्विवेदी युग के लेखक हैं–
(i) नन्ददुलारे वाजपेयी (ii) हरिकृष्ण प्रेमी (iii) डॉ० नगेन्द्र (iv) सरदार पूर्णसिंह।

126. 'अशोक के फूल' निबन्ध के लेखक हैं–
(i) हजारीप्रसाद द्विवेदी (ii) राजेन्द्र यादव (iii) महादेवी वर्मा (iv) गुलाब राय।

127. प्रसिद्ध उपन्यास लेखक हैं–
(i) मोहन राकेश (ii) रामकुमार वर्मा (iii) डॉ० सम्पूर्णानन्द (iv) महावीरप्रसाद द्विवेदी।

128. 'सदाचार की तावीज' निबन्ध संग्रह के लेखक हैं–
(i) मोहन राकेश (ii) हरिशंकर परसाई (iii) जी० सुन्दर रेड्डी (iv) राहुल सांकृत्यायन।

129. पाठ्य-पुस्तक में संकलित बलिया के मेले के अवसर पर दिया गया भाषण किस शीर्षक से संग्रहीत है?
(i) भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है? (ii) महाकवि माघ का प्रभात वर्णन
(iii) भारतीय साहित्य की विशेषताएँ (iv) आचरण की सभ्यता।

130. 'मर्यादा' और 'टुडे' के सम्पादक थे–
(i) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल (ii) हरिशंकर परसाई (iii) जैनेन्द्र कुमार (iv) डॉ० सम्पूर्णानन्द।

131. किसका वास्तविक नाम केदार पाण्डेय था?
(i) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (ii) जैनेन्द्र कुमार (iii) राहुल सांकृत्यायन (iv) मोहन राकेश।

132. राबर्ट नर्सिंग होम किस शहर में स्थित था?
(i) कानपुर (ii) इन्दौर (iii) नागपुर (iv) नयी दिल्ली।

133. 'सब रंग और कुछ राग' निबन्ध संग्रह के लेखक हैं–
(i) अज्ञेय (ii) जैनेन्द्र कुमार (iii) जी० सुन्दर रेड्डी (iv) मोहन राकेश।

134. मथुरा के पुरातत्त्व संग्रहालय के अध्यक्ष पद पर कार्य करनेवाले निबन्धकार थे–
(i) कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' (ii) रामवृक्ष बेनीपुरी
(iii) सरदार पूर्णसिंह (iv) वासुदेवशरण अग्रवाल।

135. निम्नलिखित में से कौन ललित निबन्धकार माना जाता है?
(i) श्यामसुन्दर दास (ii) सरदार पूर्णसिंह (iii) कुबेरनाथ राय (iv) रामचन्द्र शुक्ल।
136. हिन्दी गद्य के उत्कर्ष का सूर्योदयकाल था–
(i) छायावादी युग (ii) द्विवेदी युग (iii) छायावादोत्तर युग (iv) भारतेन्दु युग।
137. 'संस्कृत के चार अध्याय' के लेखक हैं–
(i) कन्हैयालाल मिश्र (ii) भगवतशरण उपाध्याय
(iii) वासुदेवशरण अग्रवाल (iv) रामधारीसिंह 'दिनकर'।
138. उपन्यास-सम्राट माने जाते हैं–
(i) श्यामसुन्दर दास (ii) जयशंकर प्रसाद (iii) प्रेमचन्द (iv) जैनेन्द्र कुमार।
139. एकांकी में अंक होते हैं–
(i) तीन (ii) पाँच (iii) एक (iv) अनेक।
140. महावीरप्रसाद द्विवेदी की रचना है–
(i) रूपक रहस्य (ii) पवित्रता (iii) रसज्ञ रंजन (iv) भाषा की शक्ति।
141. 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक थे–
(i) बालकृष्ण भट्ट (ii) प्रतापनारायण मिश्र (iii) महावीरप्रसाद द्विवेदी (iv) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।
142. 'भारत दुर्दशा' के लेखक हैं–
(i) महावीरप्रसाद द्विवेदी (ii) राय कृष्णदास (iii) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (iv) श्यामसुन्दर दास।
143. फणीश्वरनाथ 'रेणु' की रचना है–
(i) पुरस्कार (ii) मैला आँचल (iii) गबन (iv) रसज्ञ-रञ्जन।
144. 'आखिरी चट्टान' किस विधा की रचना है–
(i) रेखाचित्र (ii) संस्मरण (iii) डायरी (iv) यात्रावृत्तान्त।
145. 'सुखसागर' के लेखक हैं–
(i) इंशा अल्ला खाँ (ii) लल्लूलाल (iii) मुंशी सदासुख लाल (iv) सदल मिश्र।
146. 'यात्रावृत्तान्त' विधा के लेखक हैं–
(i) रामकुमार वर्मा (ii) राय कृष्णदास (iii) वृन्दावनलाल वर्मा (iv) राहुल सांकृत्यायन।
147. 'गेहूँ बनाम गुलाब' के लेखक हैं–
(i) वासुदेवशरण अग्रवाल (ii) हरिशंकर परसाई (iii) रामवृक्ष बेनीपुरी (iv) जैनेन्द्र कुमार।
148. हिन्दी गद्य को नयी चाल में ढालने का श्रेय है–
(i) हिन्दी प्रदीप को (ii) हरिश्चन्द्र चन्द्रिका को (iii) सरस्वती को (iv) चाँद को।
149. वाराणसी में 'भारत कला भवन' नामक संग्रहालय की स्थापना करने वाले साहित्यकार थे–
(i) राय कृष्णदास (ii) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
(iii) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल (iv) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।
150. 'छायावादोत्तर' गद्य काल की रचना है–
(i) रत्नावली (ii) रानी नागफनी की कहानी (iii) विचार-विमर्श (iv) रसज्ञ-रञ्जन।
151. 'वोल्गा से गंगा' रचना की विधा है–
(i) कहानी (ii) आत्मकथा (iii) यात्रावृत्त (iv) निबन्ध संग्रह।
152. 'जीवनी' विधा में रचना है–
(i) नीड़ का निर्माण फिर (ii) आवारा मसीहा (iii) अतीत के चलचित्र (iv) चिन्तामणि।
153. 'आर्यों का आदि देश' के लेखक हैं–
(i) जी० सुन्दर रेड्डी (ii) डॉ० सम्पूर्णानन्द
(iii) राय कृष्णदास (iv) वासुदेवशरण अग्रवाल।
154. भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी किस बोली से बनी है?
(i) अवधी से (ii) ब्रजभाषा से (iii) खड़ीबोली (iv) बुन्देली से।

●●

अध्ययन-अध्यापन

प्रस्तुत पाठ्य-पुस्तक का प्रणयन अध्ययन-अध्यापन की नवीन पद्धति को ध्यान में रखते हुए किया गया है। हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त इण्टरमीडिएट स्तर पर छात्र किशोरावस्था में पदार्पण कर चुके होते हैं। किशोर की मानसिक दुनिया बहुरंगी होती है। उसमें आदर्शवादिता एवं कल्पनाशीलता भी प्रचुर मात्रा में होती है। अतः प्रस्तुत पाठ्य-पुस्तक में पाठों का चयन करते समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि छात्र की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में विषय-वस्तु सहायक हो। पुस्तक में छात्रों की केवल रुचियों का ही ध्यान नहीं रखा गया है, वरन् उनकी रुचि के परिष्कार का भी लक्ष्य सामने रखा गया है।

प्रस्तुत संकलन में इस बात का प्रयास किया गया है कि गद्य के ऐतिहासिक विकास, उसकी विभिन्न शैलियों तथा उसकी विविध विधाओं से छात्र परिचित हो जायँ। यह कार्य गहन अध्ययन द्वारा संभव है। अतः इस पुस्तक को द्रुत पठन की पुस्तक की भाँति न पढ़ाकर विशद् एवं गहन अध्ययन की पुस्तक की भाँति पढ़ाया जाय, क्योंकि प्रत्येक पंक्ति अर्थ-बोध की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। अर्थ-बोध हमारे पढ़ाने का प्रथम मुख्य लक्ष्य होना चाहिए।

अर्थ-बोध छात्रों के पूर्व ज्ञान, शब्द-भण्डार एवं पढ़ने की गति पर प्रायः आधारित होता है। अर्थ-बोध की योग्यता का विकास करने के लिए कक्षा में छात्रों को जिन बातों का अभ्यास कराना आवश्यक है, उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :

1. सारांश बताना।
2. अनुच्छेदों का शीर्षक देना।
3. सन्दर्भ द्वारा शब्दों के अर्थ का अनुमान कर लेना।
4. केन्द्रीय भाव ग्रहण कर लेना।
5. पठित सामग्री का मूल्यांकन करना।
6. शैली की विविधता को समझना।
7. वाक्यों में शब्दों के क्रम के महत्त्व को पहचानना।
8. लक्ष्यार्थ एवं व्यंग्यार्थ को समझना।
9. सुन्दर वाक्यों को कण्ठस्थ कर लेना।

अर्थ-बोध के अतिरिक्त कक्षा में पढ़ाने का दूसरा उद्‌देश्य शब्द-भण्डार की वृद्धि है। पढ़ाते समय पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थवाची एवं समानार्थी शब्दों का ज्ञान कराना आवश्यक है। शब्द-रचना से भी छात्रों को परिचित होना चाहिए। शब्द-भण्डार में वृद्धि की दृष्टि से कोश का प्रयोग आवश्यक है। इन क्रियाओं का अभ्यास कक्षा में कराना हितकर होगा।

प्रस्तुत संकलन के पाठों को पढ़ाने का तीसरा प्रमुख उद्‌देश्य पठन-गति का विकास करना है। इस स्तर पर सस्वर पठन की अपेक्षा मौन पठन का अधिक महत्त्व है, किन्तु दोनों प्रकार के वाचनों में गति के विकास का ध्यान रखना लाभप्रद होगा। यह गति अभ्यास पर निर्भर है, अतः कक्षा में पाठनाभ्यास आवश्यक है।

इण्टरमीडिएट के छात्रों को आलोचनात्मक चिन्तन की ओर भी उन्मुख होना है, अतः छात्रों में आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास करना अध्यापक का उद्‌देश्य होना चाहिए। निबंधों में आये हुए तथ्यों की तुलना करके उनकी तर्कसंगतता देखनी

चाहिए। कारण-कार्य सम्बन्धों का विश्लेषण होना चाहिए। छात्रों को इस योग्य होना चाहिए कि वे पाठों को पढ़कर उनकी आलोचना स्वस्थ ढंग से कर सकें।

आलोचनात्मक चिन्तन के साथ-साथ छात्रों में रचनात्मक प्रवृत्ति के विकास का भी ध्यान रखना श्रेयस्कर होगा। छात्र यह देखें कि एक ही बात को विभिन्न शैलियों में किस प्रकार कहा जा सकता है। इस विशेषता को लक्षित करके उन्हें अपने स्वभाव एवं क्षमता के अनुकूल उपयुक्त शैली में भावाभिव्यक्ति का सफल प्रयत्न करना चाहिए, तभी वे आगे चलकर स्वयं भी साहित्य की श्रीवृद्धि करने में समर्थ हो सकेंगे। पढ़ाते समय अध्यापक को मनोविज्ञान के अधुनातन सिद्धान्तों का उपयोग करना चाहिए। अध्यापक को विभिन्न युक्तियों का प्रयोग करते समय यह देखना चाहिए कि वे विभिन्न युक्तियाँ साहित्यिक विधाओं के भी अनुकूल हों और छात्रों की मानसिक योग्यता, अभिरुचि एवं क्षमता के भी।

निबंधों को पढ़ाने में निबंध की विषय-वस्तु, प्रस्तुति एवं प्रयोजन पर दृष्टि रहनी चाहिए। निबंधों के विषय अनेक प्रकार के हैं। इनसे छात्रों का परिचय होना ही है। प्रस्तुतीकरण की शैली भिन्न-भिन्न है। शैली की भिन्नता प्रयोजन तथा विषय की भिन्नता के कारण है। छात्रों का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करना है कि लेखक ने अपने आशय या प्रयोजन को व्यक्त करने के लिए किस प्रकार की शैली का चुनाव किया है और इस प्रकार की शैली किस तरह के विषयों के लिए उपयुक्त होती है।

गद्यकार का कौशल उसकी अभिव्यंजना-शैली में देखा जा सकता है। व्यंग्यकार प्रायः उर्दू शब्दावली अथवा तद्भव शब्दावली का प्रयोग करता है, जबकि गंभीर विचारों की अभिव्यक्ति करनेवाला निबंधकार प्रायः तत्सम पदावली की ओर उन्मुख हो जाता है। टकसाली शब्दों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों के प्रयोग की ओर झुकाव कुछ गद्यकारों में विशेष रूप से दिखायी पड़ता है। छात्रों को इस योग्य होना चाहिए कि वे शब्दों के परे जाकर व्यंग्यार्थ की अनुभूति कर सकें। संकेतों को अच्छी तरह समझाना और लेखक के आशय को ग्रहण करना कठिन होता है और इसी कठिनाई पर विजय पाने के लिए कक्षा में पठन-पाठन की योजना बनायी जाती है।

गद्य-शिक्षण के समय अध्यापक को पाठ्य-बिन्दुओं का निश्चय पहले से ही कर लेना चाहिए। किन तथ्यों पर अधिक बल देना है और कौन-से स्थल अधिक महत्त्वपूर्ण हैं, किन वाक्यों की व्याख्या करना है, किन सन्दर्भों को देना है, इसका निश्चय प्रत्येक पाठ के शिक्षण के पूर्व ही कर लेना चाहिए। कक्षा में शिक्षण का आरम्भ चाहे जिस विधि से किया जाय, किन्तु इस बात का ध्यान रहे कि छात्र प्रारम्भ में ही लेखक से कुछ परिचित हो जायँ और नवीन विषयवस्तु को ग्रहण करने की मानसिक स्थिति में वे आ जायँ। अनुभवों एवं पूर्व अर्जित ज्ञान का भरपूर उपयोग किया जाय। निबंध पाठों के अध्ययन-अध्यापन के समय केवल परीक्षा को ही दृष्टि में रखना गद्य-शिक्षण का उद्देश्य नहीं है। परीक्षा को गौण समझा जाना चाहिए और निबंधों की विशेषताओं से परिचय प्राप्त करके अपनी शैली में परिमार्जन करने को प्रमुखता दी जानी चाहिए।

गद्य-शिक्षण में प्रत्येक पाठ के शिक्षण की विधि एक ही यांत्रिक ढंग से नहीं होनी चाहिए। जिस विधि से समीक्षात्मक पाठ पढ़ाया जायेगा, उसी विधि से भावात्मक निबंध नहीं पढ़ाया जा सकता। रेखाचित्र, संस्मरण एवं रिपोर्ताज के पढ़ाने का ढंग अलग होगा। किसी निबंध को पढ़ाने में तथ्यों एवं घटनाओं की ओर छात्र का ध्यान आकृष्ट किया जायेगा तो किसी अन्य में मनोभावों एवं शैलीगत विशेषताओं को प्रमुखता दी जायेगी। पाठ को पढ़ाने में मौन पाठ का सर्वाधिक महत्त्व होगा तो किसी अन्य में सस्वर पठन का भी उपयोग किया जा सकता है।

वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेने के अवसर पर, विद्यालयीय पत्रिका हेतु लेख लिखने अथवा किसी आयोजन पर भाषण देने के अवसर पर किसी गद्यकार की शैली के अनुकरण के लिए छात्रों को प्रेरित किया जा सकता है।

●●